पंजीयन संख्या-SVVMQLVU
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी० /PNU/OMNTJNV

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

# आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२०, अंकः-०२, अगस्त, सन्-२०१७, सं०-२०७४ वि०, दयानंदाब्द १९३, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

## जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं, वहीं विजय है!

### आज राष्ट्र को फिर चाहिए श्रीकृष्ण का योद्धा रूप !

*-दीक्षानन्द सरस्वती-*

भारत राष्ट्र के जनमानस को इस प्रकार के सदाचार-शिक्षण की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र का चारित्रिक स्तर ऊँचा उठे; उसे सदाचार की शिक्षा सत्पुरुषों के चरित्र-चित्रण से ही सम्भव है, और उन सत्पुरुषों में मानदण्ड की भाँति दो ही व्यक्ति आदर्श रूप हैं-एक पुरुषोत्तम राम और दूसरे योगेश्वर कृष्ण।

मन में यह जिज्ञासा उठनी स्वाभाविक है कि लोक में प्रचलित श्री कृष्ण के अनेक नामों में से आखिर योगेश्वर ही क्यों? इसका समाधान हम इस प्रकार कर सकते हैं कि वर्तमान युग के उद्धर्ता महर्षि दयानन्द ने सदाचार-निर्माणार्थ जिस सत्पुरुष की गणना सर्वप्रथम की है वह योगेश्वर ही हैं। उन्होंने लिखा है-

**श्री कृष्ण का जीवन आप्त पुरुषों के सदृश है- देखो, श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवतवाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं, जिसको पढ़-पढ़ा सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत-सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती!**

महाभारत ग्रंथ के रचयिता भगवान् व्यास को यह नाम अत्यन्त प्रिय था। उन्होंने विभिन्न पात्रों के मुख से श्री कृष्ण के अनेक नामों का कीर्तन करवाया है। उन्हें माधव, कृष्ण, पुण्डरीकाक्ष, जनार्दन, सात्वत, आर्षभ, वृषभेक्षण, अज, दामोदर, हृषिकेश, अधोक्षज, नारायण, पुरुषोत्तम, जिष्णु, अनन्त, गोविन्दादि अनेक नाम दिये हैं। गीता की समाप्ति पर संजय के मुख से पाण्डवों की विजय का कारण श्री कृष्ण का योगेश्वर होना है। संजय ने स्पष्ट कहा है-

**यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।**

ऐसा प्रतीत होता है कि गीता का यह अन्तिम श्लोक गीता के प्रथम श्लोक का उत्तर है। यह सर्वविदित है कि गीता का पहला श्लोक धृतराष्ट्र का प्रश्न है-

**धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।**

हे संजय! धर्म-भूमि कुरुक्षेत्र में एकत्र होकर मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया? यहाँ धृतराष्ट्र का संजय से ऐसा पूछना आवश्यक था, क्योंकि कुछ ही दिन पहले कूटनीतिज्ञ कणिक की सम्मति के आधार पर संजय को विराट् नगरी में पाण्डव-शिविर में भेजा गया था-'हे संजय! तुम वहाँ जाना और पाण्डवों की धार्मिक भावना को उद्बुद्ध करके उन्हें युद्ध से विरत करना। इस कार्य के करने में तुम कुशल हो।' राजा का आदेश पाकर संजय गए और उन्होंने संसार की नश्वरता और वैराग्य का ऐसा उपदेश दिया जिससे उसे निश्चय हो गया कि धर्मराज युधिष्ठिर युद्ध से विरत हो जाएँगे। लौटकर महाराज धृतराष्ट्र को यह पूर्ण विश्वास दिला दिया कि युद्ध न होगा और तुम्हारी गद्दी सुरक्षित रहेगी, परन्तु कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में अपने और पाण्डु के पुत्रों को युद्ध की इच्छा से एकत्रित हुआ सुन उन्हें अपनी गद्दी हिलती नजर आई और उन्होंने संजय से पूछ लिया कि तुम कहते तो कुछ थे और हो कुछ रहा है? संजय ने अपनी विवशता प्रकट करते हुए कहा कि मुझे तो एक ही बात नजर आ रही है कि जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं और जहाँ धर्नुधर अर्जुन हैं वहीं श्री, विजय, भूति और ध्रुवानीति सदा विराजते हैं, यह मेरा मत है-

**यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।**

संजय के द्वारा पटाक्षेप करते हुए गीता का यह अन्तिम श्लोक हमें यजुर्वेद के उस मन्त्र की याद दिलाता है जिससे कि किसी भी राष्ट्र को पुण्यलोक बनाया जा सकता है-

**यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना।।**

गीता के अंतिम श्लोक- **यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः** और मन्त्र के- **यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरतः सहः** और इसी प्रकार श्लोक के उत्तरार्द्ध- **तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम** एवं मन्त्र के उत्तरार्द्ध में वर्णित-**तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना** दोनों की साम्यता के स्वारस्य का आनन्द लें। मानो श्रीकृष्ण का चरित्र उक्त मन्त्र का ही भाष्य हो। आचार्य यास्क के शब्दों में यदि '**यत्र ब्रह्म च क्षत्रं....**' मन्त्र का भाष्य लिखना हो तो उस पर कहना होगा-'**अत्रेतिहासमाचक्षते**'। इस पर तुम्हें इतिहास सुनाते हैं और जो इतिहास सुनाया जाएगा उसका नाम 'योगेश्वर कृष्ण' होगा। मन्त्रके अन्तिम चरण 'यत्र देवा सहाग्निना' में उसकी कहानी छुपी हुई है। ऐसा लगता है कि इस मन्त्र-चरण ने इतिहास की पृष्ठभूमि में पाँचो पाण्डवों के लघु भ्राता सहदेव की झांकी दे रहा हो और 'देवाः' पद का बहुवचन शेष चारों पाण्डवों की ओर इंगित कर रहा हो। इसी प्रकार 'अग्नि' पद योगेश्वर कृष्ण के भारत को महाभारत अथवा चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापन की ओर इंगित कर रहा हो। योगेश्वर का यह ध्येय-रूप संकल्प ही अग्नि बना, जिसने कि पंचजनों के प्रतिनिधिभूत भिन्न-भिन्न स्वभाव के पाँचों पाण्डवों को जोड़कर रखा। योगेश्वर श्रीकृष्ण पुरोहित बन गए और उनका घोष पांचजन्य बन गया। जिसने कि विपरीत स्वभाव के पाँचो पाण्डवों को पंचागुंलियों को जोड़कर एक मुष्टि बना दिया और शतपथकार के इस वचन 'मुष्टिर्वैराष्ट्रम्' को सार्थक कर दिखाया। ऐसे ही योगेश्वर कृष्ण के लिए स्तुतिगान करने के लिए ऋग्वेद की प्रथम ऋचा हमारे सामने आ गई और सहसा वाणी से मुखरित हो उठी-

**अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।**

मैं उस योगेश्वर कृष्ण, पाण्डवों के अग्रणी, आदर्श पुरुष की स्तुति करता हूँ जो चक्रवर्ती साम्राज्य-रूप यज्ञ का दाता है और परस्पर भिन्न-भिन्न ऋतुओं वाले, विभिन्न स्वभाव वाले पाण्डवों को परस्पर जोड़ने वाला है और उस जोड़ने के निमित्त शत्रुपक्ष की सभा में भी जाकर उन्हें युद्ध के परिणामों से अवगत करा उभय-शक्तियों को परस्पर मिलाने का प्रयत्न करता है। वह स्वयं अतिशय रत्नों का धारणकर्त्ता होकर भी स्वयं अलिप्त रहता है। अलिप्त होता हुआ भी अपने कर्त्तव्य पर आरूढ़ रहता है। निःसन्देह अर्जुन के प्रति कहे हुए ये शब्द दिग- दिगन्त में गूँजते रहेंगे-

**न मे पार्थास्ति कर्त्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन। नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त्त एव च कर्माणि।। यदि ह्यहं न वर्त्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्मचेदहम्। संकरस्य च कर्त्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।।**

प्रायः यह लोग-गाथा सुनी जाती है

(शेष पृष्ठ 3 पर)

## विनय पीयूष

### चार वीर !

अयं नोऽअग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुरऽएतु प्रभिन्दन्।
अयं वाजाञ्जयतु वाजसातावयꣳशत्रूञ्जयतु जर्हृषाणः स्वाहा।।

*(यजु. : 7/44)*

एक वीर तन-मन के घाव मिटाने वाला,
एक वीर बढ़ वैरी-दल दहलाने वाला,
एक वीर वाणी से ओज जगाने वाला,
एक वीर सानंद वज्र बरसाने वाला,

चार वीर ये जय का घोष सुनाने वाले!
युद्ध भूमि में धर्म ध्वजा फहराने वाले!!

*काव्यानुवाद : अमृत खरे*

## सम्पादकीय

# गुरुदेव की शिक्षा - चतुर्थ प्रतिश्रुति

गुरुदेव डॉ.देवकीनन्दन श्रीवास्तव (लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग तदुपरान्त शान्तिनिकेतन वि.वि. पश्चिम बंगाल के भू.पू.प्रोफेसर) के सान्निध्य से प्राप्त चार शिक्षाओं को मैं यहाँ रेखांकित करना चाहता हूँ ताकि आज की पीढ़ी उन शिक्षाओं से लाभ उठा सके तथा यह अनुभव कर सके कि निकट अतीत में ही इस श्रेणी के महान शिक्षक देश में हो गुजरे हैं।

गुरुदेव की प्रथम प्रतिश्रुति का समारम्भ सन् १९५९ के उस समय होता है जबकि उनके निर्देशन में लखनऊ वि.वि. के चार चुने हुए छात्र वक्ताओं का दल सुदूर दक्षिण केरल में केन्द्र-सरकार की हिन्दी प्रचार योजना के अन्तर्गत गया था। इस दल ने गुरुवर के निर्देशन में केरल की राजधानी तिरुअनन्तपुरम् (त्रिवेन्द्रम) विश्व विद्यालय में हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। कार्यक्रम के अलावा सुदूर दक्षिण के अनेक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों- यथा पद्मनाभम् एवं मीनाक्षी मंदिर, पाण्डुचेरी श्री अरविन्द आश्रम, कन्याकुमारी, सेतुबंध रामेश्वरम् इत्यादि स्थलों का भ्रमण भी किया। इस यात्रा में सरकारी योजनान्तर्गत डॉ.श्रीवास्तव को अपने साथ एक सहायक को भी ले जाने की सुविधा प्राप्त थी। किन्तु उन्होंने अपने साथ सहायक को न ले जाकर अपनी वयोवृद्धा माता श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी को ले जाना उचित समझा। माताजी की स्वयं देखभाल करते थे- हमलोग भी उनका अनुसरण करते हुए माताजी की उचित सेवा करते- माताजी एक भक्ति परायणा, सरल निश्छल वात्सल्यमयी देवी थीं। इस प्रकरण से यह शिक्षा मिलती है कि पुत्र कितना विद्यावान् गुणी और उच्च पदस्थ क्यों न हो; और माता भले ही अल्प शिक्षित अथवा अतिसामान्य क्यों न हो; माता का स्थान सर्वोपरि है। गुरुदेव से प्राप्त शिक्षा की प्रथम प्रतिश्रुति है माता का स्थान मानव जीवन में सर्वोपरि है।

गुरुदेव शिक्षा की द्वितीय प्रतिश्रुति उपासना विषयक है। वे परम वैष्णव थे, मंदिरों और मूर्तियों में उनकी अगाध आस्था थी। इसके साथ ही वे अरविन्द-दर्शन के भी मर्मज्ञ-साधक और विद्वान थे। अनेक शिष्यों में से एक मैं ठहरा आर्य समाज का सक्रिय सदस्य। निराकार ब्रह्म का उपासक। सायं-प्रातः वैदिक सन्ध्योपासना मेरा सर्वत्र प्रचलित नियम रहता था। गुरुदेव के साथ मैंने भी तमाम मंदिरों और देव प्रतिमाओं के दर्शन किये। गुरुदेव पूर्ण निष्ठा से मंदिरों में पूजा करते थे- प्रतिमाओं के समक्ष नतमस्तक होते थे किन्तु उन्होंने मुझसे कभी वैसा करने का न तो आग्रह किया और न ही अपेक्षा की। उपासना पद्धति की स्वतंत्रता के वे पक्षधर थे। वे जानते थे कि जिस प्रकार वे स्वयं प्रतिमाओं की पूजा करते हैं वैसे ही मुझे भी वैदिक संध्या उपासना का पूर्ण अधिकार है। अतः गुरुदेव की शिक्षाओं की द्वितीय प्रतिश्रुति है- सभी को अपने ढँग से ईश्वरोपासना का पूरा अधिकार है। किसी पर कोई दबाव नहीं डालना चाहिए।

गुरुदेव की शिक्षाओं की तृतीय प्रतिश्रुति- डी.ए.वी.इन्टर कालेज, आजमगढ़ में कार्यकाल प्रारंभ (१९६१) से सम्बन्ध रखती है। डी.ए.वी.इन्टर कालेज में कार्यभार ग्रहण करने के कुछ समय बाद ही डी.ए.वी.डिग्री कालेज, जो प्रारम्भिक अवस्था में ही था, में हिन्दी प्रवक्ता का पद विज्ञापित हुआ। मैंने भी आवेदन किया और एम.ए.प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के कारण इस आशा में था कि मेरी नियुक्ति तो हो ही जायगी क्योंकि मैं तो इसके इन्टर कालेज में पहले से ही कार्यरत हूँ। किन्तु ऐसा हुआ नहीं। डिग्री कॉलेज में मुझसे कहीं अधिक योग्य और प्रभावशाली शिक्षक की नियुक्ति हो गई। मैं इस घटनाक्रम से काफी दुखी हुआ। कालान्तर में गुरुदेव से भेंट होने पर मैंने उन्हें अपनी व्यथा से अवगत कराया। गुरुदेव ने कहा- यह एक घटना मात्र है, कोई सिद्धान्त नहीं। जाओ, वहीं परिश्रम पूर्वक कार्य करते रहो। भविष्य में शीघ्र परिस्थितियाँ तुम्हारे अनुकूल हो जायेंगी। अपने सामाजिक सरोकारों के साथ कार्य करता रहा; जिसका परिणाम यह हुआ कि १९६८ में जब डिग्री कॉलेज के हिन्दी विभाग में पुनः पद विज्ञापित हुआ तो मेरी विधिवत् नियुक्ति हो गई। अस्तु गुरुवर की शिक्षा की तृतीय प्रतिश्रुति है कि किसी एक घटना से विचलित नहीं होना चाहिए। घटना घटना है, सिद्धान्त नहीं।

चतुर्थ प्रतिश्रुति का सम्बन्ध जवाहरलाल नेहरू परास्नातक महाविद्यालय बाराबंकी के हिन्दी विभाग में मेरी ज्येष्ठता के निर्धारण सम्बन्धी प्रकरण से है। राज्यपाल महोदय (कुलाधिपति, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद) द्वारा मेरी ज्येष्ठता का निर्धारण मेरे पक्ष में हो गया। प्रतिपक्ष ने इस निर्णय के विरुद्ध हाईकोर्ट से स्थगनादेश (१९८०) प्राप्त कर लिया और यह नीति अपनाई कि 'स्टे' तबतक बना रहे जबतक मैं सेवानिवृत्त न हो जाउँ। मुकदमे को अनिर्णीत बनाये रखने के सारे तरीके अपनाये गये और तारीखें बढ़वाने के अलावा एक बार तो पूरी केस फाइल ही गायब करा दी गई। एक बार दुखी मन से मैंने गुरुदेव को अपनी पीड़ा बताई। मुझे आश्वासन के रूप में इतना ही कहा कि प्रत्येक कार्य का एक समय निर्धारित है। अपने निर्धारित समय पर अवश्य ही वह कार्य होगा। प्रत्यक्षतः तो गुरुदेव ने मेरी कोई सहायता नहीं की किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से मेरे साथ एक ऐसे व्यक्ति को नियोजित कराया; जैसे अर्जुन के साथ कृष्ण। वह व्यक्ति थे बी.एन.तिवारी एडवोकेट, जो राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान विभाग से उन्हीं दिनों सेवानिवृत्त हुए थे और वकालत करने लगे थे। तिवारी जी की समुचित पैरवी का परिणाम यह हुआ कि मेरी सेवानिवृत्ति के ७ वर्ष पूर्व ही इस प्रकरण का निर्णय हो गया; जबकि प्रतिपक्ष का पूरा प्रयास था कि मेरे सेवानिवृत्ति तक इसका निर्णय होने ही न पाये। ७ वर्ष तक रीडर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए मैं ३० जून २००० को सेवानिवृत्त हुआ। गुरुदेव की शिक्षा की चतुर्थ प्रतिश्रुति है कि कोई भी कार्य यदि सही है तो अपने निर्धारित समय पर अवश्य ही होगा अर्थात् प्रत्येक कार्य का एक समय निर्धारित है।



## सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१७७

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में अष्टम समुल्लास का अंश

क्योंकि जैसे परमात्मा, जीव, जगत् का कारण तीन स्वरूप से अनादि हैं वैसे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय प्रवाह से अनादि हैं। जैसे नदी का प्रवाह वैसा ही दीखता है कभी सूख जाता कभी नहीं दीखता फिर बरसात में दीखता और उष्णकाल में नहीं दीखता। ऐसे व्यवहारों को प्रवाहरूप में जानना चाहिए। जैसे परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव आदि अनादि हैं वैसे ही उसके जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करना भी अनादि हैं। जैसे कभी ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का आरम्भ और अन्त नहीं इसी प्रकार उसके कर्त्तव्य कर्मों का भी आरम्भ और अन्त नहीं।

(प्रश्न) ईश्वर ने किन्हीं जीवों को मनुष्य जन्म; किन्हीं को सिंहादि क्रूर जन्म; किन्हीं को हरिण, गाय आदि पशु; किन्हीं को वृक्षादि कृमि कीट पतंगादि जन्म दिये हैं। इससे परमात्मा में पक्षपात आता है।

(उत्तर) पक्षपात नहीं आता। क्योंकि उन जीवों के पूर्व सृष्टि में किये हुए कर्मानुसार व्यवस्था करने से। जो कर्म के बिना जन्म देता तो पक्षपात आता।

(प्रश्न) मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई?

(उत्तर) त्रिविष्टप अर्थात् जिसको 'तिब्बत' कहते हैं।

(प्रश्न) आदि सृष्टि में एक ही जाति थी वा अनेक?

(उत्तर) एक मनुष्य की जाति थी। पश्चात् 'विजानीह्यार्य्यान्ये च दस्यवः' यह ऋग्वेद का वचन है। श्रेष्ठों का नाम आर्य, विद्वान् देव और दुष्टों के दस्यु अर्थात् डाकू, मूर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। 'उत शूद्रे उतार्ये' ऋग्वेद वचन। आर्यों को पूर्वोक्त प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए। द्विज विद्वानों का नाम आर्य और मूर्खों का नाम शूद्र और अनार्य

### आर्यों का आदि देश

अर्थात अनाड़ी नाम हुआ।

(प्रश्न) फिर वे यहां कैसे आये?

(उत्तर) जब आर्य दस्युओं में अर्थात् विद्वान् जो देव अविद्वान् जो असुर, उन में सदा लड़ाई बखेड़ा हुआ किया, जब बहुत उपद्रव होने लगा तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहीं आकर बसे। इसी से इस देश का नाम 'आर्यावर्त्त' हुआ।

(प्रश्न) 'आर्यावर्त्त' की अवधि कहाँ तक है?

(उत्तर)

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्य्यावर्त्तं विदुर्बुधाः।।१।।
सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशमार्यावर्त्तं प्रचक्षते।।२।।

उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व और पश्चिम में समुद्र।।१।। तथा सरस्वती पश्चिम में अटक नदी, पूर्व दृषद्वती जो नेपाल के पूर्व भाग पहाड़ से निकल के बंगाल के आसाम के पूर्व और ब्रह्मा के पश्चिम ओर होकर दक्षिण के समुद्र में मिली है जिसको ब्रह्मपुत्रा कहते हैं और जो उत्तर के पहाड़ों से निकल के दक्षिण के समुद्र की खाड़ी में अटक मिली है। हिमालय की मध्यरेखा से दक्षिण और पहाड़ों के भीतर रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने देश हैं उन सब को आर्यावर्त्त इसलिये कहते हैं कि यह आर्यावर्त्त देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त्त कहाया है।

(प्रश्न) प्रथम इस देश का नाम क्या था और इसमें कौन बसते थे?

(उत्तर) इसके पूर्व इस देश का नाम कोई भी नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे। क्योंकि आर्य लोग सृष्टि की आदि में कुछ काल के पश्चात् तिब्बत से सूधे इसी देश में आकर बसे थे। *(क्रमशः)*

## वेद प्रवचन

# सफलता की तीन सीढ़ियाँ

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता।।

*(अथर्व : 12/5/2)*

**शब्दार्थ-** **(सत्येन)** सत्य से **(आवृताः)** सब ओर से युक्त, घिरे हुए **(श्रिया)** लक्ष्मी से, धन से **(प्र-आ-वृताः)** और अधिक युक्त **(यशसा)** यश से, कीर्ति से **(परि)** चारों ओर से **(वृताः)** युक्त हम सब जीवन भर रहें।

**व्याख्या-**

इस मन्त्र में कुल चार शब्द हैं-सत्य, श्री और यश, ये तीन शब्द और चौथा 'आङ्'। आवृताः, प्रावृताः और परिवृताः- इन तीनों क्रियाओं में धातु एक ही है, केवल आङ्, फिर प्र-आङ् और इसके पश्चात् परि, ये तीन उपसर्ग लगे हुए हैं, जो क्रिया के अर्थ की मात्रा के द्योतक हैं। 'आङ्' का अर्थ है समन्तात्- सब ओर सोच फिर अगली क्रिया 'प्रावृताः' में आङ् के पहले प्र उपसर्ग जुड़ गया। भाव यह हुआ कि सत्य के बाद धन की मात्रा, जो उसकी व्यावहारिक सफलता का प्रमाण है और अधिक होनी चाहिए और तीसरी क्रिया 'परिवृताः' में परि उपसर्ग है, जिसका अर्थ है परितः-चारों ओर से, अर्थात् सत्य की अपेक्षा से धन की अधिकता रहे और इन दोनों की भी अपेक्षा यश की मात्रा चारों ओर से रहे, सत्य और धन का समस्त क्षेत्र यशस्वी बनानेवाला हो, अतः धातु के हिसाब से इन तीनों क्रियाओं को एक शब्द गिनकर मन्त्र में वस्तुतः चार शब्द ही हैं। किन्तु चार शब्द के इस छोटे-से मन्त्र में गागर में सागर भर दिया है, सफल जीवन का पूर्ण चित्र खींचकर रख दिया है।

प्रायः लोक में एक व्यक्ति अभावग्रस्त परिवार में जन्म ले, जिसमें दो जून का रूखा-सूखा भोजन भी कठिनाई से उपलब्ध होता हो। रहने के मकान में भी किसी ऋतु वर्षा, सर्दी और गर्मी का सुख न हो। यही बालक होश संभालने पर अपने बुद्धि कौशल से लाखों रुपये कमा डाले। अच्छे से अच्छा खाने को उपलब्ध होने लगे। रहने को प्रत्येक ऋतु में सुख सुविधा देनेवाली सुन्दर कोठी खड़ी कर दे। यातायात के लिए सुन्दर कार खरीद ले और इसके अतिरिक्ति लाखों रुपये बैंक में जमा कर ले तो ऐसे व्यक्ति को सभी सफल व्यक्ति कहते हैं किन्तु वेद कहता है इतने से किसी को सफल नहीं कहा जा सकता, जबतक कि वह विचारणीय मन्त्र की सत्यवाली शर्तों को पूरा नहीं करता, क्योंकि सफलता की कसौटी धन, वैभव, कार और कोठी नहीं हैं। सफलता की कसौटी एक ही है कि मनुष्य ईमानदारी से अपने जीवन को देखकर यह अनुभव करे कि मैंने जो कुछ कमाया है, सत्य के आधार पर किसी को धोखा नहीं दिया, किसी को दबाया नहीं। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में बड़ी शान्ति से संसार को छोड़ता है। यह है सफल जीवन की पहचान और उसका आधार **सत्य** ही है।

दूसरी बात कही-**'श्रिया प्रावृताः'** -सत्य व्यवहार रखते हुए जो संसार का ऐश्वर्य आपको प्राप्त हो, यह आपके जीवन की दूसरी सफलता है। धन अपने-आपमें कोई बुरी और त्याज्य वस्तु नहीं है। धर्मात्मा के पास आकर धन धर्म का ही विस्तार करता है। कहीं धन के माध्यम से विद्यालय खुलेंगे, कहीं अस्पताल, कहीं अनाथ और विधवाओं का संरक्षण होगा, अतः सत्यमय व्यवहार के द्वारा प्राप्त धन मनुष्य की दूसरी सफलता है।

इसके पश्चात् तीसरी और पूर्ण सफलता के लिए यशस्वी जीवन परमावश्यक बताया। आपका सत्य व्यवहार आपको यश नहीं देता तो उसमें कहीं त्रुटि है। वह सत्य नहीं, सत्याभास है, अतः भाष्यकारों ने सत्यभाषण के साथ कुछ शर्तें लगाई हैं और वे आवश्यक हैं। उनको ध्यान में रखकर आप सत्य बोलेंगे, तभी आपको यश मिलेगा और तभी वह सत्य धर्म के उच्चपद का अधिकारी होगा। सत्यभाषण के विषय में मनु ने कहा-

**सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्। प्रियंच नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।।** *(मनु.४/१३८)*

सत्य बोलो, किन्तु मीठा बनाकर बोलो! तभी आपको यश मिलेगा अन्यथा लोग आपको कठोरभाषी होने का अपयश लगावेंगे। योगदर्शन के भाष्य में व्यास महर्षि ने लिखा है, सत्य का लक्ष्य अहिंसा है। यदि सत्यभाषण से हिंसा हुई तो वह धर्म नहीं, धर्माभास है। इसलिए मनु ने कहा-सत्य बोलो, किन्तु मीठा बोलो। मधुर भाषण पर बल देने को पुनरावृत्ति की-**'अप्रियं सत्यन्न ब्रूयात्'**-कठोर सत्य मत बोलो! इससे आगे बहुत ही महत्त्वपूर्ण कहा-**'प्रियंच नानृतं ब्रूयात्'**- बात मीठी हो पर हो निराधार, ऐसा भी नहीं होना चाहिए। यह तो एक प्रकार से दूसरे को धोखा देने के तुल्य हुआ। इन सावधानियों के साथ जो सत्य बोला जाएगा, वही यश देगा।

अतः मन्त्र में कहा- आपका सत्य और धर्मपूर्वक कमाया धन आपको यशस्वी बनावे, यही जीवन की पूर्ण सफलता है।

*('श्रुति सौरभ' से साभार)*

# दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-१०१

अधर्मे धर्मज्ञः शिवसदनविध्वंसकटुको
बलाद्धर्मोच्छेदं त्वपहृतशिखासूत्रदहनम्।
शिलानालन्दानां विघटनमथान्ते प्रदहन
मसौ हाहाकारं मरणमपमानं प्रतनुते।।

वे अधर्म को ही
धर्म जानते हैं !
शिव मन्दिरों का विध्वंस करने में
वे कटुता से भरे रहते हैं !!
जबरदस्ती विधर्मी बनाना और
शिखा-सूत्र छीनकर जलाना,
तक्षशिला और नालन्दा
विश्वविद्यालयों का विध्वंस तथा
अग्नि दहन करके उन्होंने
देश में हाहाकार, मृत्यु एवं
अपमान का ही विस्तार किया है !!

*('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)*

सत्संग

# जिज्ञासा और समाधान

**जिज्ञासा** :

**'सत्यार्थ प्रकाश' चतुर्थ समुल्लास में पंच महायज्ञों के अलावा अन्य बहुत से यज्ञों का उल्लेख किया गया है। वे अन्य यज्ञ कौन कौन से हैं?**

*-डॉ.सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई*
*-पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ*

**समाधान** :

**स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।**
**महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।।** मनु.।।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में मनुस्मृति के उपर्युक्त श्लोक के हवाले से पाँच महा यज्ञों अर्थात् ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, वैश्वदेवयज्ञ और अतिथियज्ञ- के अलावा 'यज्ञैश्च' अर्थात् अन्य यज्ञों का भी उल्लेख किया है। अन्य यज्ञों में प्रथम तो अग्निष्टोयादि यज्ञ है जो इसी उपर्युक्त श्लोक में संकेतित है-

१.अग्नियज्ञ २.सोमयज्ञ ३.अग्निसोमयज्ञ ४.विश्वेदेवयज्ञ ५.धन्वन्तरियज्ञ ६.कुहूयज्ञ ७.अनुमतियज्ञ ८.प्रजापतियज्ञ ९.द्यावापृथिवीयज्ञ १०.स्विष्टकृतयज्ञ। (विशेष जानकारी हेतु देखें-मनुस्मृति की कुल्लूकभट्ट टीका)

इसके अतिरिक्त 'वैदिक सम्पत्ति' में महापंडित रघुनन्दन शर्मा ने अन्य नौ प्रकार के यज्ञों का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है-

**१.दर्शपूर्णमास- सुवर्गाय हि वै लोकाय दर्शपूर्णमासौ इज्येते।** (तैत्ति.२/२/५)

अर्थात् अमावस्या और पूर्णिमा के दिन के हवन को दर्शपूर्णमास कहते हैं।

**२.चतुर्मास्य- फाल्गुन्यां पौर्णमास्या चातुर्मास्यानि प्रयुंजीत मुखं वा एतत् संवत्सरस्य यत् फाल्गुनी पौर्णमासी।** (गोप.३/१/११)

अर्थात् फाल्गुणी पौर्णमासी आषाढ़ी पौर्णमासी और कार्तिकी पौर्णमासी को जो यज्ञ किये जाते हैं, वे चातुर्मास्य कहलाते हैं।

**३.अग्रहायण वा नवसस्येष्टि**-उत्तरायण दक्षिणायन के आरम्भ में जो यज्ञ होते हैं, वे अग्रहायण वा नवसस्येष्टि कहलाते हैं।

**४.अग्निष्टोम-एष वै ज्येष्ठो यज्ञानां यदग्निष्टोमः, (तस्मात् उ ह वसन्ते वसन्ते) ज्योतिष्टोमेन एव अग्निष्टोमेन यज्ञेत्।**

(ताण्ड.६/३/८; शत.१०/१/२/६)

अर्थात् जो प्रतिवर्ष वसन्त में वार्षिक यज्ञ होता है, उसे अग्निष्टोम कहते हैं। उसके अग्निष्टोम, उक्थ, वाजपेय, अतिरात्र आदि अनेक प्रकार हैं। यह सब यज्ञों में श्रेष्ठ कहलाता है।

**५.राजसूय और अश्वमेध-राज्ञः एवं सूयं कर्म।**
**राजा वै रायसूयेन इष्ट्वा भवति।** (शत.१३/२/२/१)

अर्थात् राजसूय से ही राजा होता है। यह राजगद्दी के समय का यज्ञ है।

**६.गोमेध**-पृथिवी को उर्वरा बनाना, नई भूमि तैयार करना और नये टापू तलाश करना, इस यज्ञ का प्रधान कार्य है। इसे गोमेध यज्ञ कहते हैं।

**७.भैषज्य**-जो बीमारियाँ एक व्यक्ति को होती हैं, उनके निवाराण का नाम चिकित्सा अर्थात् आयुर्वेद है और दूसरे प्रकार की सार्वजनिक बीमारियाँ जिस सामूहिक रीति से निवारण की जाती हैं, उसका नाम भैषज्य यज्ञ है।

**८.पुत्रकामेष्टि**-सन्तान न होती हो, तो सन्तान उत्पन्न करनेवाले, मनमानी सन्तान उत्पन्न करने वाले, तथा सन्तान को दीर्घ जीवी बनानवाले यज्ञ का नाम पुत्रकामेष्टि यज्ञ है। इस यज्ञ का कुछ भाग गर्भाधान, पुंसवन और सीमान्तोन्नयन संस्कारों में तथा कुछ भाग पितृयज्ञ में मिला हुआ है। इसका कुछ वर्णन

*(पृष्ठ 1 का शेष....)*

## जहाँ योगेश्वर...

कि एक बार कृष्णभक्त महात्मा सूरदास ने रामभक्त महात्मा तुलसीदास जी से कहा कि आप सदैव राम-मन्दिर में विराज कर राम-कथा गाते हैं, कभी कृष्ण-मंदिर में भी पहुँचकर भगवान् के दर्शन कीजिए। महात्मा तुलसीदास अपने सखा कविवर सूरदास के साथ हो लिये। कृष्ण-मंदिर पहुँचकर कृष्ण-मूर्ति को देखा, परन्तु सिर न नवाया और सहसा उनके मुख से निकला-

**कहा कहौं छबि आपकी, भले बने हो नाथ!**
**तुलसी मस्तक तब नवै, जब धनुष-बाण हो हाथ।।**

आज राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को, आबाल-वृद्ध, युवा-युवती को, श्रीकृष्ण के इस योद्धा-रूप के दर्शन की अभिलाषा है। उनका श्रीकृष्ण सुदर्शन चक्रधर होना चाहिए, तभी उनका मस्तक झुकेगा, नमेगा!

*('योगेश्वर कृष्ण' ग्रंथ की भूमिका से सम्पादित अंश-साभार)*

---

बृहदारण्यक उपनिषद् के अन्त में दिया हुआ है।

**९.अवर्षण**-वेद का 'निकामे निकामे पर्जन्यो वर्षतु' अर्थात् इच्छानुसार वर्षा हो, यह वाक्य इसी बात की सूचना देता है। इसको अवर्षण यज्ञ कहते हैं।

मुम्बई से प्रकाशित '**नूतन निष्काम पत्रिका**' दिसम्बर २०१५ अंक में प्रकाशित प्रो.सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार अपने '**यज्ञेन यज्ञै अयजात देवाः**' शीर्षक लेख में गीता के चतुर्थ अध्याय में वर्णित आठ यज्ञों का उल्लेख किया है, जिसे हम साभार उद्धृत कर रहे हैं-

गीता के चतुर्थ अध्याय में '**यज्ञेन यज्ञै अयजात देवाः**' को आधार में रखकर ही यज्ञों का जो उल्लेख किया गया है वह निम्न प्रकार है-

**१.ब्रह्माग्नि यज्ञ**-ब्रह्म को अगर अग्नि रूप मान लिया जाये तो जो भगवान् के लिए अपने को अर्पण कर देता है वह ब्रह्माग्नि यज्ञ करता है।

**२.इन्द्रियाग्नि यज्ञ**-इन्द्रियों के विषय तो अग्नि-समान हैं। इन्द्रियों के विषयों की अग्नि में पड़ने से जो सुख मिलता है उसे जो त्याग देता है वह इन्द्रियाग्नि यज्ञ करना है।

**३.आत्मसंयमाग्नि यज्ञ**-इन्द्रियाग्नि यज्ञ में एक-एक इन्द्रिय का संयम है, आत्म संयमाग्नि यज्ञ में सब इन्द्रियों का एक साथ संयम है।

**४.द्रव्य यज्ञ**-जो व्यक्ति जितनी सम्पत्ति उत्पन्न करता है उसे समाज के लिए समर्पित कर देता है, उसे किसी बात की कमी नहीं रहती।

**५.तपो यज्ञ**-जो शारीरिक भोग विलास को त्यागकर तपस्यामय जीवन बिताता है, तपस्या उसे फल जाती है। उसे कोई शारीरिक कष्ट नहीं होता यह उसका तपोयज्ञ है।

**६.योग यज्ञ**-जो मानसिक भोग-विलास को त्यागकर योगिक जीवन बिताता है, उसे फल जाता है, उसे कोई मानसिक कष्ट नहीं होता।

**७.ज्ञान यज्ञ**-ज्ञान के प्रकाश से जिसके भीतरी नेत्र खुल जाते हैं, जिसे संसार की अनित्यता का ज्ञान हो जाता है, अज्ञान उसके निकट नही आता, वह ज्ञान यज्ञ करता है।

**८.प्राण यज्ञ**-जिसका जीवन यज्ञमय है, उसे प्राणों का मोह भी नहीं रहता। समाज, धर्म, देश के लिए वह प्राणों को निछावर कर देता है। ऐसा व्यक्ति प्राण यज्ञ करता है।

इस प्रकार मुख्य रूप से ३२ प्रकार के यज्ञों का यहाँ उल्लेख किया जाता है। इसके अलावा आज बहुकुण्डीय यज्ञों की परम्परा विकासोन्मुख है। इसके अतिरिक्त यज्ञ सम्बन्धी विशेष जानकारी हेतु शतपथ ब्राह्मण, गोपथ ब्राह्मण, तैत्ति. उपनिषद्, आदि ग्रंथ देखने चाहिए।

महान् आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य को यज्ञों के बृहद् आरण्यक से बाहर निकाल कर एक सुगम और प्रशस्त पथ पर लाकर खड़ा किया है। 'संस्कार विधि' जैसे आर्ष ग्रंथों में वर्णित पंच महायज्ञों में अपने ध्यान को केन्द्रित करना चाहिए- जिससे धर्मार्थ काम मोक्ष- की सिद्धि प्राप्त हो सके।

**-डॉ.वेद प्रकाश आर्य**

# वाचनालय से

**हमारी गौशालाएँ कैसी हों?**

मासिक '**नूतन निष्काम पत्रिका**' (मुम्बई) ने पं.ब्रह्मदेव आर्य के लेख 'गौशाला का वैज्ञानिक रूप' के माध्यम से पाठकों को बताया है कि हमारी गौशालाएँ कैसी होनी चाहिए! ब्रह्मदेव आर्य लिखते हैं कि गौशाला सर्वदा शहर आदि, मनुष्यों के निवास स्थान से दूर खुले, हवादार और ऊँचे स्थान बनानी चाहिए, ताकि उसमें ताज़ी हवा ओर प्रकाश खूब पहुँचता रहे।...पानी के निकास का पूरा प्रबन्ध होना चाहिए।...रेतीली, कंकरीली और कुश्क मिट्टी वाली भूमि गौशाला के लिए उपयोगी है।...चारागाह के लिये पर्याप्त और सुथरी भूमि हो। ऐसे स्थान में जानवर प्रसन्न और स्वस्थ रहते हैं। गौशाला के समीप नीम, पीपल आदि छायादार वृक्षों का होना आवश्यक है। हरे-भरे वृक्षों पर पक्षीवृन्द गायों के मित्र बनकर उनकी चिचड़ी, चीचड़ आदि का सफाया कर देंगे। गौशाला का रुख धूप और वायु का रुख देखकर स्थिर करना चाहिए।

....यदि गायों के लिये बन्द स्थान बनायें जायें, तो भारी गन्दी हवा बाहर जाने के लिये एक रोशनदान (खिड़की) छत के समीप और दीवार के नीचे भाग पर, भूमि की सतह से दो-तीन फुट के अन्तर पर ताजी हवा अन्दर आने के लिए होना चाहिए।

ब्रह्मदेव आर्य ने लेख में गौशाला के निर्माण के लिए विस्तृत नाप-जोख भी दी है, किन्तु नहीं बताया कि इनका आधार क्या है, या ये कहाँ से लिये गये हैं।

**यज्ञ ही क्यों?**

पाक्षिक '**परोपकारी**' (अजमेर) में प्रकाशित डॉ.धर्मवीर के प्रवचन (लेखिका : सुयशा आर्य) 'यज्ञ ही क्यों?' की तीसरी कड़ी में यज्ञ की अविकल्पता को भली भाँति समझाया गया है। डॉ.धर्मवीर कहते हैं कि हमारे ऋषियों ने यज्ञ को हमारे जीवन में एक विशेष स्थान दिया है।...अग्नि के जलने से....हवा हल्की होती है। जो चीज़ हल्की होती है, वो वातावरण में ऊपर उठ जाती है (वायु हल्की होने और ऊपर उठने से) वायुचक्र नये सिरे से शुरू होता रहता है। यज्ञ करने से ये चक्र हम जारी कर सकते हैं। हमारी जो स्थिर हवा है, उसको बदल सकते हैं। जितने बाकी सब उपाय हैं, ये उपाय होने पर भी न तो समग्र हैं, न सबल हैं। यदि कोई उपाय है, तो वो केवल यज्ञ का उपाय है। प्रतिदिन यज्ञ अवश्य करना चाहिए। इससे जड़ और चेतन, दोनों को लाभ होता है।

डॉ.धर्मवीर कहते हैं कि मनुष्येतर अन्य जीव यज्ञ नहीं कर सकते, इसलिये उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं बनती। प्रकृति उसका निराकरण करती है।...(हम कर सकते हैं) इसलिये हम निराकरण का प्रयास करें।

**माँ, माटी और मौलवी!**

साप्ताहिक '**आर्य सन्देश**' (नई दिल्ली) के सम्पादकीय लेख के अनुसार ममता बनर्जी जब सत्ता में आयीं तब उनका नारा था- माँ, माटी और मानुष, लेकिन जिस तरह उनके वर्तमान कार्यकाल में वर्ग विशेष द्वारा हिंसा हो रही है, उसे देखकर कोई भी आसानी से कह देगा कि राज्य में उनका नारा 'माँ, माटी और मौलवी' ही बन कर रह गया।

सम्पादकीय लेख में मुस्लिम लेखक ताबिश सिद्दीकी के शब्दों को उद्धरित किया गया है, जो न केवल पठनीय है, वरन् मननीय भी है। ताबिश सिद्दीकी ने लिखा है कि अगर आप मुसलमान हैं और आपको मेरी बात बुरी लग रही है, तो जान लीजिये, कि आप पूरी तरह से अरबी दादागीरी की गिरफ्त में हैं। ये सब धर्म नहीं है। ये राजनीति है और शुद्ध राजनीति। अरबों का इस्लाम धर्म नहीं है। मस्जिदों में इज़राइल को बद्दुआ देना धर्म नहीं है। ग्यारह साल बच्चे को एक कार्टून के लिये दोष देना और उस वजह से पचासों लोगों की दुकानों को जला देना मजहब नहीं है। यह राजनीतिक दादागीरी है और आपके धर्म का ढांचा कुछ नहीं अब सिर्फ राजनीति है। बस गड़बड़ यह हुइ कि आपकी इस दादागीरी को लोगों ने अब तक सहा है तो आपको यह अपने धर्म का हिस्सा लगने लगा है।

ताबिश सिद्दीकी आगे लिखते हैं कि इसे मजहब कहते हैं आप? शर्म नहीं आती आपको खुद को मुसलमान कहते हुए? बांग्लादेश में आपने कितने ब्लागर बच्चों को मार दिया, पाकिस्तान में ईशनिन्दा के नाम पर कितनों को मार दिया और यहाँ चूँ कि आपका बस नहीं चल रहा है, तो आप दुकानें जला कर काम चला रहे हैं। ये बीमारी बहुत गहरी है और ये बीमारी बढ़ती ही जा रही है। इसलिये, क्योंकि सारी दुनिया ने इसे स्वीकार कर लिया। तुम आक्रामक बने रहे और लोग इसे स्वीकार करते रहे। यह मजहब है कि सारी दुनिया आप से डरे? यह मजहब है कि वहां लोग चैन से न जी पायें, जहां आप बहुसंख्यक हो जायें? इस खूंखार मानसिकता को मजहब कहते हुए आपकी जबान नही जलती है? दादागीरी और मजहब में फर्क समझिये। जल्दी समझिये, क्योंकि दुनिया का भरोसा और सब्र अब टूट रहा है!

**पूर्ण सुरक्षा!**

पाक्षिक '**आर्य जीवन**' में प्रकाशित स्वामी सत्यपति जी के लेख 'वेदों में योग' की एक टिप्पणी : सांसारिक वस्तुओं के साथ हमारा सम्बन्ध नित्य रहने वाला नहीं है।....ईश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सदा से था, आज भी है और आगे भी रहेगा। इस सम्बन्ध का कभी विच्छेद नहीं होता। ऐसे ईश्वर को प्राप्त करके ही मनुष्य पूर्ण सुखी हो सकता है अन्यथा नहीं। ●

# शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' का जून २०१७ अंक पढ़ा। इसका सम्पादकीय हिन्दू धर्म से इकतरफा पलायन के कारणों को रेखांकित करते हुए वर्तमान में पुनरागमन एवं विस्तार की संभावनाओं की तथ्यात्मक आख्यां प्रस्तुत करता है, जो जनसामान्य के लिये ज्ञानवर्द्धक एवं रुचिकर है। डॉ.भवानीलाल भारतीय का मुखपृष्ठीय लेख स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा 'सत्य की खोज' हेतु किये गये दुर्गम प्रयास का प्रभावी वर्णन करता है। महात्मा आनन्द गिरि का धारावाहिक आलेख 'अनन्त की खोज' संसार को तथ्य की कसौटी पर परखने का साधन वर्णित करता है। अन्य विभिन्न लेख, कवितायें एवं साहित्यिक/वैदिक समाचार रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। इसी अंक में पृ.३ पर 'व्यक्ति विशेष' स्तम्भ के अन्तर्गत 'हिन्दी गद्य विधा में स्वर्णिम हस्ताक्षर-श्रीमती नीरजा द्विवेदी' लेख में 'कुछ अपनी कुछ जगबीती' पुस्तक की समीक्षा पुस्तक को पढ़ने को प्रेरित करती है।

*-महेश चन्द्र द्विवेदी*
*पूर्व पुलिस महानिरीक्षक, उ.प्र.*
*१/१३७, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ*

***

भारत के १४वें राष्ट्रपति का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न हो गया। श्री रामनाथ कोविंद, वह प्रथम राष्ट्रपति हैं, जो उत्तर प्रदेश (कानपुर) के हैं। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद बिहार से थे। अब यह सिद्ध हो गया है कि कोई पद मात्र रईस वर्ग के लिए ही हो; यह आवश्यक नहीं है। भारत इस बात का गवाह रहा है-'विद्वान् सर्वत्र पूज्यन्ते'। राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अपनी कहानी रंक से राजा की रही है। पुराकाल में महाराजा हरिश्चन्द्र परीक्षा के दौरान राजा से रंक हुए अवश्य, पर अपनी सत्यनिष्ठा के कारण वह पुनः सत्यव्रती हरिश्चन्द्र होकर विख्यात हुए। वस्तुतः हमारा भारत आर्यावर्त्त सृष्टिकाल से हर मायने में सर्वोच्च रहा। आज भी गर अपनी गरिमानुकूल हम सत्यपथ के अनुगामी हो सकें तो विश्वगुरु का पद पुनः प्राप्त होकर रहेगा। इसी सद्भाव के साथ हम अपने नये राष्ट्रपति जी का सहर्ष अभिनन्दन करते हैं।

*-बाँके बिहारी 'हर्ष'*
*अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद*

***

'आर्य लोक वार्ता' के जुलाई अंक में स्व.देवकीनन्दन श्रीवास्तव जी की स्मृति में लिखे गये सम्पादकीय में अनेक संस्मरण स्यूत हैं, जो अच्छे व प्रभावोत्पादक हैं। 'वाचनालय से' स्तम्भ में केनोपनिषद की कथा, देव और ब्रह्म से संबन्धित, जिसमें देवों के अहंकार को ब्रह्म द्वारा चूर किया गया है अच्छी व अनुकरणीय है। 'वेद प्रवचन' के अन्तर्गत शिवकुमार शास्त्री की वेदमंत्र व्याख्या 'बुड्ढा जवान को खा गया' भी अच्छी है। डॉ.कैलाश निगम की रचना 'सौ सौ नमन कर लें' बड़ी भावपूर्ण और गेय शैली में निबद्ध है। सविता वाणी की रचना 'अन्तस् वाणी' अपने अन्तस में नारी वर्ग की पीड़ा को समाहित किये हुए है-'जलना गलना नियति मेरी कहने को जन कल्याणी हूँ' बड़ी मार्मिक है। वर्षा ऋतु पर रीतिकालीन कवि पद्माकर का कवित्त 'गरजन लागी री' हिन्दी साहित्य की एक निधि है। मुखपृष्ठ पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का लेख 'आर्य भारत के मूल निवासी, कहीं बाहर से नहीं आये', मेरी उस धारणा की पुष्टि करता है जो मैंने सन् १९९२ में समस्या पूर्ति करते हुए रचना लिखी थी 'हम आर्य विदेशों से आये नहीं' जो वर्ष २००४ में मेरे प्रकाशित सवैया शतक 'स्रोतस्विनी' के पृष्ठ १७ की शोभा बनी थी। अन्य लेख व कविताएँ भी ज्ञानवर्द्धक हैं। सम्पादक जी को साधुवाद।

*-दयानन्द जड़िया 'अबोध'*
*३७०/२७, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ*

***

'आर्य लोक वार्ता' मासिक के २०वें वर्ष में प्रवेश हेतु आपको बधाई। 'आर्य लोक वार्ता' समयानुसार हमें डाक द्वारा मिल जाता है। पढ़कर आत्मसन्तोष की प्राप्ति होती है। सभी अंक परिश्रम एवं योग्यतापूर्वक तैयार किये जाते हैं। वेद प्रचार में अभूतपूर्व योगदान हेतु आप तथा सम्पादक मंडल बधाई के पात्र हैं। हर वर्ष की तरह समयानुसार अपनी सहयोग राशि भेज रही हूँ।

*-श्रीमती कुमुद गुप्ता*
*बी-१/११४, सेक्टर-जी, अलीगंज, लखनऊ*

***

आर्य लोक वार्ता का जून अंक मिला। डॉ.भवानीलाल भारतीय के शब्दों में स्वामी दयानन्द जी की योग साधना यात्रा का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया है। सत्य से साक्षात्कार कराने वाले लेखक को साधुवाद। काव्यमय 'विनय पीयूष' प्रशंसनीय है। अमृत खरे इसके लिए बधाई के पात्र हैं। विद्वता और सुचिन्तन से परिपूर्ण आपके सम्पादकीय में तीन तलाक का उत्कृष्ट विवेचन किया गया है। इस वीभत्स कुरीति का अतिशीघ्र निवारण होना ही चाहिए। मुस्लिम नारी को 'तीन तलाक' की प्रथा कलंक है। आशा है, मोदी जी कोई न कोई सर्वमान्य हल अवश्य खोज लेंगे। श्रीमती नीरजा द्विवेदी का जीवन परिचय अनुकरणीय है। 'शुभाकांक्षा' तथा 'काव्यायन' की सभी रचनाएँ सुखद और सशक्त लगीं। वाचनालय से, मनुष्य का विराट रूप, अनन्त की खोज आदि विचार शृंखलाएँ सुन्दर ज्ञान प्रदान करती हैं। सम्पूर्ण पत्र लघु आकारीय होते हुए भी गंभीर ज्ञान का भंडार लगता है। आपकी सशक्त लेखनी को नमन।

*-सविता वाणी*
*चौक बाजार, गौरीगंज, अमेठी (उ.प्र.)*

***

'आर्य लोक वार्ता' के जून १७ अंक में महाकवि पं.अनूप शर्मा के घनाक्षरी छंदों को पढ़कर मुझे परम सन्तोष और आनन्द का अनुभव हुआ। मैं प्रारंभ से ही स्व. अनूप शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रशंसक रहा हूँ। किसी समय उनके छंद पाठ्यक्रम में सम्मिलित रहे हैं। 'आर्य लोक वार्ता' से मेरा परिचय दि.२८.०७.१७ को श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' के

जन्मदिवस पर आयोजित काव्यगोष्ठी में, जो 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी, हुआ। पत्र के जून तथा जुलाई दोनों अंक देखने को मिले, चित्त प्रसन्न हुआ। वैदिक विचारधारा से मेरा विशेष स्नेह सम्पर्क मेरे परिवार के घनिष्ठ सम्बन्धी प्रो.जयकुमार मुद्गल के माध्यम से हुआ था। मुद्गल जी जो आज इस संसार में नहीं हैं, अभी दो दिन पूर्व वे इस धरा धाम को छोड़ चुके हैं। वैदिक वाङ्मय के जाने माने विद्वान् प्रवक्ता थे। यह जानकर मुझे मेरी आत्मा को सुखानुभूति हुई कि प्रो.मुद्गल आर्य लोक वार्ता सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य के हितैषी, मित्र और शुभचिन्तक हिन्दी साहित्य के अग्रज विद्वान् सुपरिचित व्यक्ति थे। आर्य लोक वार्ता के माध्यम से मैं प्रो.मुद्गल जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मुझे प्रसन्नता होगी यदि अनूप शर्मा के छन्दों को आप प्रकाशित करेंगे; साथ ही कवि सम्राट अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के कृतित्व की चर्चा-परिचर्चा करेंगे। यह कितने खेद की बात है कि कवि सम्राट की उपाधि से विभूषित श्री हरिऔध का एक भी चित्र उ.प्र.हिन्दी संस्थान में नहीं है। इससे बढ़कर घोर आपत्तिजनक बात क्या हो सकती है कि हिन्दी के सबसे प्रमुख स्तम्भ का ही चित्र हिन्दी संस्थान में न हो। आशा है, अधिकारीगण शीघ्र ही इस कमी को दूर करके कृतघ्नता के महापाप के भागी बनने से अपने को बचायेंगे। *-रवीन्द्रनाथ तिवारी*
*बी-१/२६, सेक्टर-जी, जानकीपुरम, लखनऊ*

***

'आर्य लोक वार्ता' जुलाई अंक में 'आर्य हैं भारत के मूल निवासी' शीर्षक अग्रलेख उन छद्म एवं दंभी इतिहासकारों को दर्पण दिखाता है जो 'आर्यावर्त्त' नामारूप भारत की गरिमा की छवि धूमिल कर रहे हैं। श्री विद्यानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में प्रस्तुत सत्य एवं विद्वतापूर्ण तथ्या अभिनन्दनीय है। सम्पादकीय में गुरुदेव देवकीनन्दन श्रीवास्तव के अतुलनीय व्यक्तित्व-कृतित्व का दिग्दर्शन अत्यंत भावपूर्ण शब्दों में प्रदान किया गया है जो भूरिशः नमनीय है। ऐसे शब्द ऋषि को साश्रु श्रद्धांजलि। वाचनालय से, अक्षरलोक, विनय पीयूष आदि नियमित स्तम्भों में प्रेरक चिन्तन समाहित है एतदर्थ भाई अमृत खरे साधुवाद के पात्र हैं। आपके कृपालु सौजन्य से मुझे प्रख्यात समाजसेवी श्रीमती मधुर भण्डारी का दर्शन लाभ मिला, आपका साभार धन्यवाद। सम्मानित पत्र आर्य लोक वार्ता अपने गौरवशाली प्रकाशन को बीसवां वर्ष स्पर्श होने पर हृदयाह्लादित है, निस्सन्देह यह आपकी सतत शब्द साधना का प्रतिफल है। आपके और पत्र के सुदीर्घजीवी होने की सद्भावना है। अस्तु,

आर्य लोक वार्ता को लगा बीसवाँ वर्ष।
फलित हुई श्रम-साधना, छाया नूतन हर्ष।
बिन विज्ञापन ज्ञान का, बाँटे दिव्यालोक।
आर्य-विचारों से हरे, जन-जन का भयशोक।।

*-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'*
*११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ*

***

# अक्षर लोक

**भागवत कथामृत** (अवधी प्रबन्धकाव्य)
रचनाकार : डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
प्रकाशक : अमन प्रकाशन, १/२०, महरौली नई दिल्ली—११० ०३०
प्रस्तुति : हार्ड बाउण्ड,
पृष्ठ : ३९४
मूल्य : ८०० रुपये

'भागवत कथामृत' महर्षि वेदव्यास के संस्कृत ग्रन्थ 'श्रीमद् भागवत' का अवधी में किया गया काव्यानुवाद है। देश-विदेश की अनेकानेक भाषाओं में 'श्रीमद् भागवत' के अनुवाद होते रहे हैं। अवधी में यह पहला अनुवाद है। श्रीकृष्ण के भक्त इसे उनका 'शब्दावतार' मानते हैं। रसिक पाठकों को इसमें प्रेम, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का अद्भुत समन्वय मिलता है।

डॉ.शुक्ल 'दो शब्द' में लिखते हैं कि इस कृति का मैंने व्यासकृत 'श्रीमद् भागवत' के मूल पाठ के भाव के समीप रहने का यत्न किया है, किन्तु कुछ प्रसंगों में अन्य संत-विद्वानों के निष्कर्षों को भी सूत्र रूप में दे दिया है और साथ ही यत्र-तत्र कुछ अपनी ओर से भी जुड़ गया है।

'भागवत कथामृत' में प्रमुख रूप से दोहा चौपाई छन्दों का प्रयोग किया गया है। गौण रूप से हरिगीतिका, तोमर, सिंहावलोकित, सवैया, घनाक्षरी, कवित्त, सारस, पंच चामर आदि छन्दों का भी प्रयोग हुआ है। जगह-जगह पर स्तुतियाँ गीतमय हैं। कवि का अवधी भाषा और छन्दों पर अधिकार स्पष्ट दीखता है। इसीलिये पाठकों और श्रोताओं के लिये 'भागवत कथामृत' सहज, सरल, सरस और रुचिकर बन पड़ा है। 'भागवत कथामृत' एक रम्य रचना है। अनुवाद होते हुए भी मौलिक कृति जैसी स्वाभाविकता रखती है। निश्चित ही 'श्रीमद् भागवत' और अवधी कविता में रुचि रखने वालों को यह कृति लुभायेगी।

**चुनिंदा व्यंग्य** (महेशचन्द्र द्विवेदी के व्यंग्य)
सम्पादक : डॉ. रमेश तिवारी
प्रकाशक : गीतिका प्रकाशन १६,साहित्य विहार, बिजनौर(उ.प्र.)
प्रस्तुति : हार्ड बाउण्ड,
पृष्ठ : १६०
मूल्य : ३०० रुपये

'चुनिंदा व्यंग्य' एक बुक-सीरीज़ है, जिसमें प्रति पुस्तक किसी एक व्यंग्यकार के चयनित व्यंग्य लेख संग्रहीत रहते हैं। समीक्ष्य 'चुनिंदा व्यंग्य' में व्यंग्यकार महेशचन्द्र द्विवेदी के व्यंग्य संग्रहीत हैं। सम्पादक हैं डॉ.रमेश तिवारी।

अपनी भूमिका 'आँखन देखी व्यंग्य की धार' में सम्पादक डॉ.तिवारी लिखते हैं कि महेशचन्द्र द्विवेदी जी की व्यंग्य रचनाओं में से कुछ महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक रचनाओं को इस संग्रह में संकलित किया गया है। इनकी रचनाएँ दैनिक जीवन की घटनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार से पाठकों का साक्षात्कार कराती हैं।...वचन वक्रता द्विवेदी जी के व्यंग्य लेखन को विशिष्ट बनाती है। इस संग्रह को पढ़ते हुए आपको कई ऐसे प्रसंग मिलेंगे, जहाँ लेखक ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा सामान्य दिखने वाली विसंगतियों को भी व्यंग्य करते हुए महत्त्वपूर्ण बना दिया है। यह दृष्टि और यह लेखन सतत सतर्कता, सूक्ष्म पर्यवेक्षण-दृष्टि के बगैर संभव नहीं हो सकता। इस दृष्टि से द्विवेदी जी के व्यंग्य आपको आपके समाज से कुछ और परिचित करने का काम करते हैं।

'चुनिंदा व्यंग्य' संग्रह में द्विवेदी जी के अड़तालीस व्यंग्य लेख संग्रहीत हैं। पाठकों को इनमें अनेक पूर्वपठित रचनाएँ भी मिल जायेंगी, किन्तु अलग-अलग जगहों पर बिखरी पसन्दीदा रचनाओं का एक जगह पा जाना सुखद ही होगा। श्रेष्ठ रचनाओं के चयन, संग्रहण और उन पर सार्थक पूर्वपीठिका लेखन के लिये सम्पादक डॉ.रमेश तिवारी साधुवाद के अधिकारी हैं। पुस्तक निश्चित ही पठनीय, प्रशंसनीय और संग्रहणीय है।

**महात्मा जलेश्वर मुनि**
संयोजक : पाल प्रवीण
प्रकाशक : विद्यासागर फाउण्डेशन 'योगाश्रम', एम.एस.१२०, सेक्टर—डी, अलीगंज, लखनऊ
प्रस्तुति : हार्ड बाउण्ड, पृष्ठ : ३१
मूल्य : अघोषित

लखनऊ के विद्यासागर फाउण्डेशन ने प्रखर एवं प्रेरक वैदिक व्यक्तित्व महात्मा जलेश्वर मुनि के व्यक्तित्व और कृतित्व को उजागर करते संस्मरणों और हृदयोद्गारों का उजागर करती प्यारी सी पुस्तिका प्रकाशित की है। उद्देश्य है, पाठकों को उनके परिवार और उनके कठिन पुरुषार्थ के बारे में जानकारी देना, ताकि लोग मुनि जी के उज्ज्वल चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

कमलेश पाल की दृष्टि में महात्मा जलेश्वर मुनि उज्ज्वल चरित्र के धनी और कठिन पुरुषार्थी हैं, तो पाल प्रवीण उन्हें एक चुम्बकीय व्यक्तित्व और एक सच्चा वैदिक मिशनरी मानते हैं। विदुषी डॉ.निष्ठा विद्यालंकार को अपने नाना मुनि जी, ओजस्विता, तेजस्विता तथा सौम्यता की साक्षात प्रतिमूर्ति नज़र आते हैं। आचार्य जयराम त्यागी श्री जलेश्वर मुनि वानप्रस्थ को ईश्वर-विश्वासी, कभी हताश न होने वाले और हर समय प्रसन्नवदन मुस्कराने वाला पाते हैं। डॉ.वेद प्रकाश आर्य मुनि जी के जीवन में आर्य संस्कृति के उपासक की गौरव यात्रा के दर्शन करते हैं। ओजोमित्र शास्त्री को वह पूर्णिमा का चन्द्रमा लगते हैं। चन्द्रमा तो घटता बढ़ता रहता है, उसमें कुछ कालिमा दिखायी देती है, किन्तु यह मुखचन्द्र कालिमा रहित चाँदनी बिखेरता रहाता है। डॉ.रामकृष्ण आचार्य के लिये वह जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं, तो आचार्य विश्वव्रत शास्त्री के लिये तेजस्विता, सादगी व कर्मठता के संगम हैं। धर्मेन्द्र आर्य के लिए वह एक निस्पृह गृहस्थ संन्यासी हैं, तो डॉ.सत्यकाम आर्य के लिए एक महात्मा, रामकेश शर्मा के लिये आर्यत्व के प्रतीक, प्रेममुनि के लिये वेद प्रचारक, शिवशंकर लाल के लिये सहज सरल व्यक्तित्व! रामा आर्य 'रमा' उन्हें प्रेरणास्रोत मानती है। इस छोटी, किन्तु महत्वपूर्ण पुस्तिका के लिए पालल प्रवीण जी बधाई एवं साधुवाद के पात्र हैं।

धारावाहिक-(75)

# मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

## आत्म-निरीक्षण

*(गतांक से आगे)*

उन्नतिकाम मनुष्य को अपने छोटे दोषों के प्रति भी असावधान नहीं रहना चाहिये। उनसे प्रतिष्ठा-हानि के अतिरिक्त कर्म-हानि भी होती है। छोटी बातों में सतर्क रहना ही कार्य-दक्षता का प्रमाण है। कारीगर के हाथ की सफाई का पता तभी चलता है, जब बारीक से बारीक काम में कहीं कोई भूल-चूक न हो। मामूली छूट से उसकी अयोग्यता प्रकट होती है। जीवन की कारीगरी में भी इसी प्रकार की निर्दोषता चाहिये। एक विलायती विचारक ने ठीक ही कहा है कि छोटी छोटी बातों से पूर्णता प्राप्त होती है और पूर्णता साधारण वस्तु नहीं है। जबतक किसी वस्तु में कोई कमी है, तबतक तो वह अपूर्ण और सदोष ही रहेगी। उस कमी को दूर करना चाहिये, जिससे सारी वस्तु का महत्त्व कम होता है।

अपने दोषों की उपेक्षा अथवा उनको छिपाने की चेष्टा करना मूर्खता है। आप स्वयं उनकी उपेक्षा कर सकते हैं, परन्तु जाँच करने वाले तो उन्हें पकड़ ही लेंगे। दुष्टों की आँखें तो उन्हीं पर रहती हैं क्योंकि उन्हीं के द्वारा आपकी हानि हो सकती है। छिद्र पर प्रहार करके ही तो शत्रु विजयी होते हैं। एक नीतिकार ने सत्य कहा है कि अपने दोषों को सुधारना ही शत्रु से बदला लेने का सर्वोत्तम उपाय है। उनकी ओर ध्यान न देने से आत्मबल क्रमशः क्षीण हो जाता है। अपने दोषों को आप चुपचाप पचा भी नहीं सकते। इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि संसार आपको नहीं पहचानेगा। संसार से आप अपने को छिपा नहीं सकते वह परम पारखी, प्राचीन अनुभवी एवं त्रिकालदर्शी है-सूर्य चन्द्र और तारों के तथा असंख्य प्राणियों के नेत्रों से आपको प्रत्येक क्षण घूर-घूर कर देखता है। उसके पास पवन जैसा गुप्तचर है जो आपके अन्तस्तल में भी प्रवेश कर सकता है। आप उससे अपने दुर्विचारों को भी छिपाकर नही रख सकते। आपके सुमन या कुमन की सुगन्ध या दुर्गन्ध दूर-दूर तक पहुँच ही जाती हैं दुर्गुणों का विज्ञापन बिना अखबार में छपाए ही हो जाता है। आप स्वयं उसे चाहे न पढ़िए, लेकिन दूसरे लोग तो बिना पढ़े मानते ही नहीं।

### २-स्वछिद्रान्वेषण

ऐसी दशा में प्रत्येक व्यक्ति को उचित है कि वह जीवन एवं तत्संबन्धी प्रत्येक विषय को सूक्ष्म दृष्टि से देखे और अपनी त्रुटियों को पहचानकर यत्नपूर्वक उनका सुधार करे। एक पाश्चातय पंडित ने लिखा है कि 'प्रत्येक कार्य में छोटी बातों का सूक्ष्म निरीक्षण ही सफलता का रहस्य है।' जिस ढंग से कोई व्यवसायी अपनी रोकड़ मिलाता है, उसी ढंग से सबको अपने जीवन का हिसाब-किताब ठीक रखना चाहिए। एक पैसे की भूल से रोकड़ गड़बड़ा जाता है; उसी प्रकार एक भी त्रुटि से जीवन में गड़बड़ी आ जाती है।

मनुष्य को दोषज्ञ होना चाहिए। दोषज्ञ होने का अर्थ परछिद्रान्वेषी होना नहीं है। परछिद्रान्वेषण में तो सभी प्रवीण होते हैं। दोषज्ञ वह है जो अपने दोषों का भी जानकार हो। जैसे, सच्चा ज्ञानी वह है जो आत्मज्ञानी हो। यह बड़ा कठिन कार्य है। दूसरों की पीठ तो हर कोई देख लेता है, लेकिन स्वयं अपनी पीठ कोई आसानी से नहीं देख सकता। उसे देखना भी आवश्यक है।

अब प्रश्न यह है कि कोई मनुष्य अपनी बुराइयों की छानबीन या गलतियों की जाँच-पड़ताल कैसे कर सकता है? नीति का वचन है कि कोई किसी के सामने उसकी बुराई नहीं करता, अतः अपने दोषों को स्वतः लोक-शास्त्र की दृष्टि से देख लेना चाहिए-

प्रत्यक्षं दुर्गुणान्नैव वक्तुं शक्नोति कोऽप्यतः।
स्वदुर्गुणान्स्वयं चातो विमृशेल्लोकशास्त्रतः।।

इसी को हम आत्म-निरीक्षण या स्व-छिद्रान्वेषण कहते हैं। इस उपाय से अपने स्वभाव, दृष्टिकोण, विचार और व्यवहार आदि की परीक्षा करने से मनुष्य को अपनी बहुत-सी कमजोरियों का पता चल जाता है। संसार को दोष देने के पूर्व अपने दोषों को भी देख लेना चाहिए। संसार को अन्धकारमय कहने के पहले यह देख लीजिए कि कहीं आपके हृदय-सदन में ही तो अँधेरा नहीं है। अपनी उस मनोव्यथा को ढूँढिए जिसके कारण हर्ष में भी आपको विषाद की ही छाया दिखाई पड़ती है। यदि दुनिया धुंधली दिखाई पड़ती है तो उसे ही दोष मत दीजिये। संभव है, आपकी दृष्टि में ही धुंधलापन हो। किसी काम के बिगड़ने पर उस काम को अथवा विघ्न-बाधाओं या बेचारे वृद्ध विधाता को ही दोष मत दीजिए। अपने बुद्धि-दोष और कर्म-दोष पर भी विचार कीजिए। यह देखिए कि आपकी मति तो कुंठित नहीं है। आपकी मानसिक क्लीवता ही तो आपकी असफलता का कारण नहीं है? जो विकार आपको बाहर दिखाई पड़ता है, उसका मूल स्वयं आपके भीतर हो सकता है। ठीक से पता लगाइए तो अनेक पाप-तस्कर आपके मन के महल में घुसे हुए मिलेंगे। उन्हें स्वयं और दूसरों की सहायता लेकर भी उसी प्रकार पकड़िये, जैसे कोई चोर को पकड़ता है।

दूसरों की दृष्टि का लाभ इस प्रकार लिया जा सकता है। मान लीजिए, लोग आपको दुत्कारते हैं-आपका तिरस्कार करते हैं। उस अवस्था में उन पर रोष करने के पहले उनकी दृष्टि से स्वदोष का अवलोकन कीजिए। अपनी उस गन्दगी की ओर ध्यान कीजिए, जिसके कारण लोग आपसे नाक-भौं सिकोड़ते हैं। यह देखिए कि कहीं आप ही में तो श्वानवृत्ति-अर्थात् काटने दौड़ना, भूंकना, जीभ निकाले रहना, दूसरों के द्वार पर खड़े रहना, भगाने से भी न भागना, स्वार्थवश सबके पीछे घूमना, आदि-नहीं है? यदि आपमें ऐसे लक्षण होंगे तो आपका आदर कोई भला आदमी कैसे करेगा? यदि कोई आपका विश्वास नहीं करता तो यह देखिए कि आपकी विश्वास पात्रता में कहाँ कमी है। यदि लोग आपसे चौंकते हैं तो उन्हें भला-बुरा कहने के पहले अपनी उन दुर्बलताओं को भी देख लीजिए, जिनके कारण उन्हें आपसे सावधान रहना पड़ता है। यदि आपको दूसरों से सम्मान नहीं मिलता तो इस बात पर विचार कीजिए कि आप गुण- चरित्र से, वास्तव में, सम्मान के योग्य भी हैं या नहीं। भूख लगने से ही किसी को भोजन नहीं मिलता। जो अध्यापक यह कहते हैं कि आजकल के शिष्य पूर्वकाल के छात्रों की भांति गुरु-भक्त नहीं होते और जो बाप यह कहते हैं कि आजकल के लड़के पिता को देवता- तुल्य नहीं मानते, उन्हें यह भी देखना चाहिए कि उनमें स्वयं गुरुता और देवता पन का अभाव तो नहीं है।

*(मनुष्य का विराट् रूप से साभार, क्रमशः)*

व्याख्यान माला (31)

# अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

## आनन्द

*(गतांक से आगे)*

यह तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है कि तुम विवेकजन्य इच्छा से प्रेरित होकर कर्म करो या ऐन्द्रिक आसक्ति से मोहित होकर कर्म करो पर सर्वदा स्मरण रखो, जो भी तुम इन्द्रियों की आसक्ति से प्रेरित होकर करते हो वह सब कर्म दुःख संताप देने वाले होते हैं। इन्द्रियों के मोह से निकलने के लिए आसक्तियों को सरल मार्ग उपलब्ध है अगर आप परमात्मा को मानते हैं, और इस पर श्रद्धापूर्वक निष्ठा रखते हैं, तो बड़ा सरल तरीका है। ऐसा तरीका जो निश्चय पूर्वक इस चक्रव्यूह से मुक्त कर दे। गीता में कहा है-

आपूर्यमाणमचल प्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्ति माप्नोति न काम कामी।

जैसे सब ओर से परिपूर्ण अचल प्रतिष्ठा वाले समुद्र में नाना नदियाँ मिलकर भी उसे चलायमान नहीं कर पातीं, वैसे ही जो ज्ञान सब इच्छाओं को समा देता है, वह शान्ति प्राप्त करता है। कामनाओं का वशवर्ती कामी शान्ति प्राप्त नहीं करता। ज्ञान परमात्मा का स्वरूप है। अतः इच्छाओं को परमात्मा के अधीन कर दे, परमात्मा द्वारा उपदिष्ट ज्ञान के प्रति आत्मसमर्पण कर दे, तो कर्म यज्ञ बन जाते हैं। जो भी कुछ ज्ञानार्थ किया जायेगा, अपने क्षुद्र सुख के लिए नहीं किया जायेगा वह सब 'यज्ञ' होगा। इसके अतिरिक्त जो भी कुछ कर्म होंगे वह बन्धन के कारण होंगे। अतः नियत कर्म, वेदोक्त कर्म, करने का अर्थ है जीवन का 'यज्ञीकरण' होना। वह कर्म विश्व जनित जीवन और प्राणिमात्र के साथ संगति करने वाले होंगे। कर्त्ता को काटकर पृथक नहीं कर देंगे। ज्ञान की श्रीवृद्धि करने वाले होंगे। उन कर्मों के फल से अन्यों को भी लाभ होगा। यज्ञ शब्द के धात्वर्थ में यह तीनों बातें रखी गयी हैं। गीता में कहा गया है-

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्म बन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्त संग समाचर।।

यज्ञ और परमात्मा के लिए किए हुए कर्म के सिवाय अन्य कर्म मनुष्य को बन्धन में करने वाले होते हैं। अतः अर्जुन आसक्ति से रहित होकर कर्म कर। परमात्मा को कर्म अर्पण करने का यह अर्थ नहीं है कि हम भगवान का नाम लेकर चाहे जो कुछ करते रहें इसका अर्थ है कि कर्म करने से पूर्व और करते समय सतत यह बोध बना रहे कि वह अन्तर्यामी हमारे अन्दर बैठा हुआ सब कुछ देख रहा है और हम जो कुछ भी करें वह उसकी विभूतियों के गुणों के विरुद्ध न हो। जैसे-आप भोजन करने बैठें तो भोजन करने से पूर्व आपकी मनःस्थिति यह होनी चाहिए कि मैं जो कुछ भी खाने जा रहा हूँ वह अन्तःस्थ सर्वेश को अर्पण है, जब यह भाव होगा तो यह विचार भी साथ होगा कि परमात्मा परम पवित्र है, अतः भोजन भी पवित्रतम होना चाहिए। भगवान लोभ मोह से परम मुक्त हैं अस्तु भोजन करते समय हमें अधिक खाने का लोभ नहीं होना चाहिए और साथ ही स्वाद के प्रति आसक्ति नहीं होनी चाहिए। जब मनुष्य भोग के विषय में विवेक अपना निर्णायक मान लेता है तब भोग मर्यादित हो जाते हैं और अपवर्ग के साधन बन जाते हैं। इस विषय पर फिर कभी विचार करेंगे अभी तो केवल इतना ही समझना है कि भोगासक्ति से उठने वाली इच्छाएँ मानसिक शान्ति को भंग करती हैं तथा आनन्द के स्थान पर दुख और क्लेश उत्पन्न करती हैं। इस सम्बन्ध में एक विचारणीय बात यह है कि भोगेच्छाओं का उठना मानसिक एवं शारीरिक रोग का लक्षण है। जिसमें जितनी अधिक भोग कामनाएँ उठती हैं वह उतना ही अधिक मानसिक रोगाक्रान्त होता है। और इन भोगेच्छाओं का शरीर के साथ भी गहरा सम्बन्ध है। अस्तु वह मनुष्य शरीर की दृष्टि से भी रोगी होना चाहिए। जैसे अधिक खाने की इच्छा और चटोरापन प्रायः पेट के रोगियों में पाया जाता है। अधैर्य अर्थात् कार्य करने में हड़बड़ी और उत्तेजना प्रायः हृदय रोगियों में पाया जाता है। निर्बलता में काम विकार तीव्र होता है। अस्तु इन सारी विकृतियों को दूर करके ही आनन्द की पात्रता मिल सकती है। हम जिस आनन्द की चर्चा कर रहे हैं उसकी एक बड़ी सुन्दर व्याख्या उपनिषद् में दी गई है। ऋषि कहते हैं-

सैषाऽऽनन्दस्य मीमाँसा भवति।।

उस आनन्द सम्बन्धी विचार प्रारम्भ करते हैं। आनन्द की जो क्षीण आभा संसार में है वह किस स्थिति में भोगी जाती है इसको स्पष्ट करते हुए उपनिषद् में कहा गया है-

युवा स्यात्साधु युवाध्यापक आशिष्टो
दृढ़िष्ठो बलिष्ठ स्रतेयं।
पृथिवी सर्वा वितस्यपूर्णा स्यात स
एको मानुष आनन्दः।।

किसी युवा को जो श्रेष्ठ आचरण वाला हो, शासन करने में कुशल हो, सम्पूर्ण अंग इन्द्रियाँ दृढ़ हों, सब प्रकार से बलवान हो, उसे धन ऐश्वर्य से पूर्ण सारी पृथ्वी मिल जाय तो वह मनुष्य लोक का एक आनन्द है।

सुना आपने, मित्रो;

मनुष्य लोक के आनन्द के लिए कितनी शर्तें बतायी गयी हैं।

पूर्ण युवा हो, बीमार और कमजोर नहीं अपितु सम्पूर्ण दृढ़ अंग, इन्द्रियों और बल से युक्त, लन्ठ न हो, पूर्ण शिक्षित हो, भोंदू न हो, शासन करना जानता हो और फिर श्रेष्ठ आचारण वाला हो। वह भौतिक परम ऐश्वर्य को जब भोगता है तब मनुष्य लोक का अनन्द क्या है, उसे समझता है।

नितान्त दुराचारी, युवावस्था में ही जर्जरित, कम पढ़ा लिखा, शठ, विटामिन के इन्जेक्शन और टॉनिक के सहारे जीने वाला चाहे प्रशासनाधिकारी ही क्यों न हो, उसे क्या मालूम कि मनुष्य लोक का आनन्द क्या होता है। जो इस भौतिक जगत के क्षीण आनन्द से ही वंचित है, वह उस आनन्द की कल्पना कैसे कर सकता है जो पूर्ण इच्छा निवृत्त होने से, परमात्म भाव से मिलता है। ऐसे सौगुना मनुष्य आनन्द बराबर है एक मानव गन्धर्व आनन्द के। देवताओं का वेदज्ञ श्रोत्रिय विद्वानों का एक आनन्द बराबर है मनुष्य गन्धर्वों के सौ आनन्द के। देवताओं के आनन्द से हजार गुना अधिक है वह आनन्द जिसकी मीमाँसा उपनिषद् कर रहा है। मनुष्य से लेकर प्रजापति तक के आनन्द की चर्चा उपनिषद् ने की है। यह मनुष्य, मनुष्य गन्धर्व देवता इत्यादि सब विभिन्न मनःस्थिति और परिस्थिति के द्योतक शब्द हैं। इन सब का सम्बन्ध मनुष्य से ही है। इस विवेचन का अर्थ है कि समस्त सम्भावित आकांक्षाओं के

प्रस्फुटित हो जाने से जो आनन्द होता है, उससे भी बड़ा विलक्षण ब्रह्मानन्द है। इस रूपक से एक बात और भी स्पष्ट हो गयी है कि उक्त आनन्द की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण वाह्याभ्यन्तरीय भौतिक विकास आवश्यक है।

प्राचीन ऋषियों ने जीवन की प्रणाली इस आधार पर ही तैयार की थी। सामाजिक संरचना में ही वह तत्व डाल दिए गए थे जिससे प्रत्येक व्यक्ति सहज रूप से सर्वांग विकास करता चले। किन्तु अज्ञानतावश जीवन की वैदिक पद्धति धीरे-धीरे लुप्त होती चली गयी और उसके स्थान पर जो कुछ भी हमारे पास है, वह सब विकृत है, सड़ा हुआ है। आज जो कुछ भी भ्रष्टाचार, अराजकता, दुख, द्वन्द्व आप देख रहे हैं और भोग रहे हैं, उसका मूल कारण है सामाजिक ढांचे का भ्रष्ट होकर विकृत हो जाना। समाज सुधार का काम आप लोग करें। मैं इस प्रकरण को आगे की ओर ले चलता हूँ। पूर्ण विकास से मतलब है कि शरीर निरोग और दृढ़ हो, मन विकारों से मुक्त हो। बुद्धि वेद शास्त्र से प्रखर और गतिशील हो। शरीर को दृढ़ और स्वस्थ रखने से ही बहुत सी बुराइयाँ छूट जाती हैं। बहुत से गंदे विचार जो निर्बल शरीर में उठने स्वाभाविक हैं, नहीं उठते हैं। शरीर की साधना का तप और संयम से होती ही होती है। अगर बच्चे को प्रारम्भ से व्यायाम कुश्ती का शौक डाल दिया जाय तो वह उन सब बुराइयों से बचा रहता है जिनमें प्रायः बच्चे किशोर अवस्था में फँस जाते हैं। स्वस्थ और सबल शरीर में मन बीमार नहीं हो सकता। अतः विकास की प्रथम सीढ़ी शरीर साधना है। मानसिक साधना के लिए प्रभु भक्ति ही एक मात्र साधन है। मन को पवित्र और साहसी बनाए रखने के लिए ईश्वर विश्वास और कर्म में आस्था आवश्यक है। मन को खाली न छोड़ा जाय। चिन्तन जप और विचार द्वारा मन स्वस्थ रहता है। बुद्धि के मार्जन के लिए स्वाध्याय सत्संग और अध्ययन अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त भोजन, शयन, जागरण, व्यवहार इत्यादि जो कुछ भी तुम करते हो वह सब व्यवथित होना चाहिए। जितना जिन्दगी को मर्यादित नियन्त्रित किया जायगा उतना ही मानसिक ग्रन्थियों का साफ होना संभव होगा। शक्ति पूर्वक ही अंकुश लगाने से गज नियन्त्रण में रहता है। वैसे ही संकल्प शक्ति के प्रभूत प्रयोग से ही जीवन व्यवस्थित होता है। यहाँ स्थिति यह है कि अपना खुद का जीवन अव्यवथित है, दूसरों को क्या कहा जाय। इसलिए न बच्चे कहना मानते हैं और न पत्नी कहे में चलती है।

अस्तु मित्रों,

बच्चों को कुछ मत कहो। तुम अपना जीवन बदलो। अनुकरण करना बच्चों का स्वभाव है वह अपने आप तुम्हारे पीछे चलने लगेंगे। आनन्द से हमारी अवधारणा क्या है, इसे स्पष्ट करते हुए आगे चलेंगे-

*(क्रमशः)*

# काव्यायन

स्वतंत्रता–दिवस

## तिरंगा

❑रामकुमार गुप्त

भारत माँ की शान तिरंगा,
हम सबका है मान तिरंगा।
केसरिया रंग त्याग सिखाता,
श्वेत शांति का भाव जगाता,
हरा रंग खुहहाली सूचक,
चक्र सदा श्रम करो बताता,
मातृभूमि के अमर शहीदों–
का करता गुणगान तिरंगा।।
नभ में ऊँचे यह लहराये,
आजादी की याद दिलाये,
शांति, अहिंसा, प्रेम, एकता–
का दुनिया में यश फैलाये,
हर भारतवासी को बाँटे,
अपना प्यार महान तिरंगा।।

*–पश्चिमी दीक्षिताना, गोला गोकर्णनाथ, खीरी–262802*

## स्वतंत्रता-पर्व

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

त्याग, शौर्य बलिदान का, है स्वतंत्रता पर्व।
पन्द्रह अगस्त पावन दिवस, भरे हृदय में गर्व।

ध्वज तिरंगा देश की, आन बान मुस्कान।
दमक रहा श्रम-ओज से, भारत का दिनमान।

स्वतंत्रता अक्षुण्ण हो, करें सतत संघर्ष।
मूल्य चुकायेंगे सदा, देकर प्राण सहर्ष।

क्रान्तिकारियों ने रचा, भव्य दिव्य इतिहास।
दीन दुखी के अधर पर, अब लाएं मृदु हास।

गति न थके नव प्रगति की, छाए सुख उल्लास।
भाव स्वदेशी से भरें, जन-जन में विश्वास।

उर अदम्य साहस भरा, विजयी भारत वीर।
जल थल नभ गिरि पर रखें, दृष्टि धीर-गम्भीर।

सैनिक पाकर वीरगति, करे अमर निज नाम।
सच्चे वीर सपूत को, करता राष्ट्र प्रणाम।

*–117, आदिल नगर, विकासनगर, लखनऊ*

तुलसी–जयन्ती

## तुलसी महत्व

❑राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

जाकी मंजु कृति पै पुरंदर पुरी मैं बैठि
आजहूँ प्रमोद उर पूरै मातु हुलसी।
मानस चरित कहि सौरभित कीन्ही निज
कीरति कलित कमनीय कंज कुल-सी।
भव सिंधु दुख को हरै को उतरै को कियो
राम भक्ति पूरन सप्रेम पुण्य पुल-सी।
नागरी गुनागरी के नागर ब्रजेश बेस
जै जै श्री महानुभाव रामदास तुलसी।।

पावन हैं पूजनीय परम प्रसंसित हैं
राम रंग राते हैं बचाते दीह दुख तैं।
मानस चरित के हैं सोधक ब्रजेश बेस
सेवत छुड़ावैं भव राग रोग रुख तैं।
नागरी सुमति हितू साधु बल दल दोऊ
सौंरत अभव्य भाव नासत बपुष तैं।
दास तुलसी मैं तुलसी मैं हैं असीमैं गुन
आवैं जौन ही मैं कहि आवैं पै न मुख तैं।।

*('ब्रजेश विनोद' से)*

*–ग्राम–गोनी, पोस्ट–गोंडवा, जिला–हरदोई*

# श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

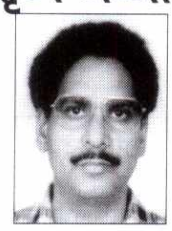

❑डॉ. कैलाश निगम

## नाग को नाथने वाले !

जेल में देवकी
–औ–बसुदेव के
कोटिक दुःख
विनासने वाले।
गोकुल में यशुदा
और नन्द के
द्वार पे निद्धियाँ
बाँटने वाले।
गोपियों के सँग
रास रचा
इस सृष्टि में
प्रेम प्रकाशने वाले।
पाप हमारे भी
नाथ दो हे प्रभु!
कालिया–नाग को
नाथने वाले।

## मेरी भी ओर निहारो !

पूतना के पय
में विष देख के
वक्ष से प्राण
निकालने वाले।
भूधर ले छिंगुरी
पर गोकुल
गोधन प्रीति से
पालने वाले।
बाँसुरी के स्वर में
अनुराग के
राग अलौकिक
डालने वाले।
मेरी भी ओर
निहारो कभी
हरि विश्व को
देखने–भालने वाले।

*–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ*

## हर्ष–चतुष्पदी

### क्रान्ति के बाद शान्ति

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

एडवोकेट ग्राहक के
पक्ष में ही बोलता है,
जिरह कला से ही
मिलती उसे फतह।
अच्छी दलील सदा
कीलती विपक्षियों को,
'सत्यमेव जयते' पाता
इन्कलाब की जगह।
लक्ष्य भेदना है
जिसका प्रधान गुण।
ज्योतिष गणित भी है
पार्थशर की तरह।
शान्ति की सकून भी
मिलता है क्रान्ति उपरान्त,
जल बीच मीन किन्तु
प्यासी है बिना वजह।।

*–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद*

# कालजयी काव्य

## श्रीकृष्ण का मातृभूमि प्रेम

❑जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

आधुनिक युग में ब्रजभाषा के महान कवि श्री जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' ने 'उद्धव-शतक' के रूप में एक अमर काव्य की रचना की है। इस ग्रंथ से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर हम कुछ ऐसे छन्द प्रस्तुत कर रहे हैं; जिनमें मथुरा में अत्याचारी कंस के वध के पश्चात् राज्यवैभव को प्राप्त श्रीकृष्ण अपनी जननी जन्मभूमि-माँ यशोदा तथा ब्रजभूमि (गोकुल) को बार बार याद करते हैं। आशा है, श्रीकृष्ण द्वारा अपने प्रिय मित्र उद्धव को सम्बोधित इन छन्दों को पढ़कर काव्यप्रेमी ब्रजभाषा के लालित्य, माधुर्य के साथ ही कृष्ण के लोकरंजक-रूप की मनोरम झाँकी का अवलोकन कर सकेंगे। –सम्पादक

नंद औ जसोमति के प्रेम-पगे पालन की
लाड़-भरे लालन की लालच लगावती।
कहै रतनाकर सुधाकर-प्रभा सौं मढ़ी
मंजु मृगनैनिनि के गुन-गन गावती।।
जमुना-कछारनि की रंग-रस-रारनि की
बिपिन-बिहारनि की हौंस हुमसावती।
सुधि ब्रज-बासिनि दिवैया-सुख-रासिनि की
ऊधौ नित हमकौं बुलावन कौं आवती।।

रूप-रस पीवत अघात ना हुते जो तब
सोई अब आँस ह्वै उबरि गिरिबौ करैं।
कहै रतनाकर जुड़ात हुए देखैं जिन्हैं
याद किएँ तिनकौं अँवाँ सौं घिरिबो करैं।।
दिननि के फेर सौं भयौ है हेर-फेर ऐसौ
जाकौं हेरि फेरि हेरिबोई हिरिबौ करैं।
फिरत हुते जु जिन कुंजन मैं आठो जाम
नैनरि मैं अब सोई कुंज फिरिबौ करैं।।

मोर के पखौवनि को मुकुट छबीलौ छोरि
क्रीट मनि-मंडित धराइ करिहैं कहा।
कहै रतनाकर त्यौं माखन-सनेही बिनु
षट-रस व्यंजन चबाइ करिहैं कहा।।
गोपी-ग्वाल-बालनि कौं झौंकि बिरहानल मैं
हरि सुर-बृंद की बलाइ करिहैं कहा।
प्यारौ नाम गोविंद गुपाल कौ बिहाइ हाय
ठाकुर त्रिलोक के कहाइ करिहैं कहा।।

कहत गुपाल माल मंजु मनि पुंजनि की
गुंजनि की माल की मिसाल छबि छावै ना।
कहै रतनाकर रतन-मैं किरीट अच्छ
मोर-पच्छ-अच्छ-लच्छ-अंसहू सु-भावै ना।।
जसुमति मैया की मलैया अरु माखन कौ
काम-धेनु-गोरस हूँ गूढ़ गुन पावै ना।
गोकुल की रज के कनूका औ तिनूका सम
संपति त्रिलोक की बिलोकन मै आवै ना।।

*('उद्धव–शतक' से साभार)*

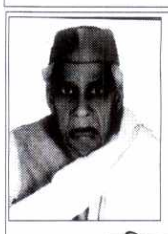

## राष्ट्रपति-अभिनन्दन

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

परिवर्तन की प्रभा, पुनीत छाई मंजु,
अरुण सुछवि मध्य, खग मोद पाते हैं।
जन-मन अन्तर की, हुई अभिलाषा पूर्ण,
उन्नति-विकास के सरोज छवि छाते हैं।
भारत के राष्ट्रपति, 'रामनाथ कोविंद',
विजयी हो जन उत्साह को बढ़ाते हैं।
सार्वभौम सर्वतन्त्र ये स्वतंत्र गणतंत्र,
आज विश्व-नेता यश, भारत का गाते हैं।

धर्म-जाति-वर्ग का न, भेद भाव रंच मात्र,
सुजन समाज से भी राष्ट्रपति आते हैं।
रहे कभी छप्पर में, काम किया खेत मध्य,
बन उपकारी जन-मन जीत जाते हैं।
पढ़ लिख आगे बढ़, राजनीति पंथ गहा,
सबके हितैषी बन, नेता कहलाते हैं।
'उत्तर प्रदेश' से प्रथम बार राष्ट्रपति,
'दयानन्द' 'कोविंद' की कीर्ति सौम्य गाते हैं।

*–'चन्द्रा मण्डप', 370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ*

## हरदोई-समाचार

# श्री रामनाथ कोविंद आर्यराष्ट्र के महान् राष्ट्रपति हैं, उन्हें दलित कहना नासमझी है

**-डॉ.सत्य प्रकाश**

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद का अभिनन्दन करते हुए आर्य समाज सण्डीला, हरदोई के पूर्व प्रधान डॉ.सत्य प्रकाश ने एक वक्तव्य में कहा है कि देश के सर्वोच्च पद पर आदरणीय श्री रामनाथ कोविंद का चुना जाना अत्यन्त हर्ष और गौरव की बात है। वे एक सुयोग्य समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के प्रति समर्पित व्यक्ति हैं। मैं आर्य समाज सण्डीला की ओर से उनका अभिनन्दन करता हूँ और बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनके नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में राष्ट्र प्रगति की ओर बढ़ेगा, लेकिन जब उनके नाम के साथ 'दलित' शब्द जोड़ दिया जाता है, तो मुझे कष्ट होता है। देश की आजादी के लगभग सत्तर वर्ष के बाद भी सम्पूर्ण समाज को हम एक रूप नहीं बांध सके हैं। हम लोगों को यह विश्वास दिलाने में असफल रहे हैं कि हम सभी परमात्मा के पुत्र हैं-'वयं सर्वे भ्रातरः'। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' हमारा नारा है, आदर्श वाक्य है।

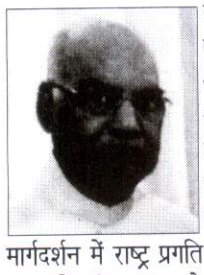

डॉ.सत्य प्रकाश ने आगाह किया है कि जातिवाद, वर्गवाद, भेदभाव की भावना एक भयंकर रोग की तरह पूर्ण समाज को खोखला बना रही है। आर्य समाज तो प्रारंभ से ही जन्मगत वर्ण व्यवस्था के स्थान पर गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था का पोषक और प्रचारक रहा है; जिसमें न कोई दलित है न कोई नीच या अस्पृश्य। ऐसी दशा में हमें भगवान् राम एवं श्रीकृष्ण के आदर्शों का अनुसरण करते हुए जातिवाचक शब्दों का प्रयोग करने से बचना चाहिए। मैं यहाँ 'आर्ये लोक वार्ता' के यशस्वी सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य की एक कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करन चाहता हूँ-

सबको सदैव शुचि, स्वाध्याय सीख देती-
'आर्य लोक वार्ता' अभी भी अविजित है।
शिष्टाचार सदाचार सभ्यता सुसांस्कृतिक,
जीवन में जिनके श्रेष्ठ सद्गुण फलित हैं।
विधिशास्त्र न्यायशास्त्र धर्मशास्त्र काव्यशास्त्र,
मेधा बुद्धि श्रद्धा- उर करुणा कलित है।
रामनाथ कोविंद महान् आर्य राष्ट्रपति-

## राजस्थान-समाचार

# साधक की साधना स्मारिका का विमोचन

कोटा एवं आसपास के क्षेत्र में समाज के विकास में श्रीकृष्ण साधक का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। उनके किये गये कार्यों का ही परिणाम है कि आज आर्य समाज कोटा अपने कार्यों से प्रगति के पथ पर सतत आगे बढ़ रहा है। उक्त विचार एम.डी.एच.के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी ने कोटा के सुप्रसिद्ध श्रीकृष्ण साधक के जीवन पर प्रकाशित स्मारिका के विमोचन के अवसर पर अपने संदेश में व्यक्त किये। श्रीकृष्ण साधक के जीवन पर इस स्मारिका के प्रकाशक जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रीकृष्ण जी एक कुशल संगठनकर्ता थे। उनके बताये पथ पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा आज की सभी आर्य समाजों के साथ मिलकर आर्य समाज एवं वेद प्रचार का कार्य कर रही है।

स्मारिका के विमोचन के लिए जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में एक शिष्टाचार मण्डल जिसमें आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, स्मारिका के सम्पादक ओमप्रकाश आर्य, अरविन्द पाण्डेय प्रधान आर्य समाज गायत्री विहार तथा श्रीकृष्ण साधक के सुयोग्य पुत्र डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, सूरजचंद गुप्ता ने महाशय धर्मपाल से उनके कीर्तिनगर स्थित कार्यालय में भेंट की एवं उन्हें विमोचन की प्रतियां प्रदान कीं। विमोचन के अवसर पर श्रीकृष्ण साधक मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा महाशय जी को स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। सम्मान के इस अवसर पर जिला सभा कोटा द्वारा महाशय जी का केसरिया पगड़ी, मोतियों की माला, एवं ओम का पटका ओढ़ाकर अभिनन्दन किया गया।

## मथुरा-समाचार

# प्रो.जयकुमार मुद्गल नहीं रहे

श्री रवीन्द्र नाथ तिवारी ने सूचित किया है कि हिन्दी-संस्कृति एवं वैदिक विधानों के मर्मज्ञ, अधिकारी विद्वान् प्रो.जयकुमार मुद्गल नही रहे। विगत जुलाई माह में उनका मथुरा में निधन हो गया। प्रो. मुद्गल आर्य समाज आन्दोलन से आजीवन जुड़े रहे। आर्य समाज मथुरा के विभिन्न पदों को समय समय पर उन्होंने सुशोभित किया तथा एस.एन.अग्रवाल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज मथुरा के हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में सराहनीय सेवाएँ कीं।

ज्ञातव्य है कि मथुरा कॉलेज से पूर्व प्रो.मुद्गल डी.ए.वी.इन्टर कालेज, आजमगढ़ में कई वर्ष तक हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कार्यरत रहे तथा आजमगढ़ में डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज की प्रारंभिक संरचना में भी उनका योगदान रहा। विशेष परिस्थितियों वश उन्हें १९६१ में आजमगढ़ से मथुरा चले आना पड़ा। आजमगढ़ से मथुरा आने के बाद भी प्रो.मुद्गल की चर्चा बराबर आजमगढ़ में होती रहती थी क्योंकि वहाँ के सामाजिक साहित्यिक सरोकारों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रहती थी।

## लखनऊ-समाचार

# भावी कार्यक्रम

### आर्यसमाज राजाजीपुरम का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मंदिर राजाजीपुरम् लखनऊ के तत्वावधान में दि.११ से १४ सितम्बर २०१७ तक वार्षिक उत्सव आयोजित होगा। प्रातःकाल एवं सायंकाल उभय सत्रों में प्रतिदिन यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश प्रवचन आमंत्रित विद्वानों के द्वारा होता रहेगा। १७ सितम्बर को गत वर्षों की भांति वैदिक श्राद्ध दिवस अर्थात् जीवित माता पिता पितामह गुरुजनों को सम्मानित किया जायेगा।

इस सुअवसर पर प्रख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य हरिप्रसाद शास्त्री, गुरुकुल वृन्दावन को वेदोपदेश एवं श्री मोहित शास्त्री को भजनोपदेश हेतु आमंत्रित किया गया है। नगर की जनता से अनुरोध है कि अधिकाधिक संख्या में इन कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने स्वयं तथा परिवार और समाज के जीवन को सार्थक और सुन्दर बनायें। *(निरंजन सिंह)*

(गतांक में प्रकाशित समाचार में भूल से छपे हुए अगस्त को कृपया सितम्बर पढ़ने का कष्ट करें-सं.)

# नवीन कार्यालय का उद्घाटन

१३.०८.१७। पतंजलि योगपीठ (पूर्वी क्षेत्र) के प्रचार-प्रभारी श्री मदन गोपाल सिंघल के पुत्र श्री विकास सिंघल एवं श्री अमित सिंघल- सिगमा कम्प्यूटर्स (हज़रतगंज) संस्थान के कारण जाने पहचाने जाते हैं। सिंघल परिवार के नवीन कार्यालय का- पार्श्वनाथ टावर-१, फेज-२, विभूति खण्ड, गोमती नगर में वैदिक विधि से यज्ञ हवन द्वारा उद्घाटन सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। यज्ञ में विकास एवं अमित के साथ ही श्रीमती कविता, श्रीमती शिल्पी, पुत्री वाणी, कृष्णा, वृन्दा, आनंदी तथा महिम ने यज्ञ में भाग लिया। आचार्य ने आशीर्वाद देते हुए वाणिज्य संस्था की सफलता की शुभकामनाएँ दीं।

# जन्म दिवस

०३.०८.१७। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रसार-व्यवस्थापक श्री अमित वीर त्रिपाठी के जन्म दिवस पर वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रीमती शशि, रश्मि, सरला आर्य, आलोक वीर आर्य, डॉ.वेद प्रकाश आर्य इत्यादि पारिवारिक सदस्यों की उपस्थिति में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री पाल प्रवीण, श्रीमती रामा आर्य 'रमा', निमिषा वाजपेयी, अनूषा त्रिपाठी, मलयज त्रिपाठी इत्यादि के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए।

## सीतापुर-समाचार

# वार्षिकोत्सव

आर्य समाज उरदौली सीतापुर का पंचम वार्षिक उत्सव १५ से १६ जुलाई २०१७ को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस इवसर पर एटा जिले से पधारे श्री रघुनाथ देव वैदिक प्रवक्ता तथा स्थानीय विद्वान् श्री महावीर स्वामी, प्रेमचंद भजनोपदेशक का प्रभाव उपस्थित श्रोताओं पर अच्छा पड़ा। सीतापुर से श्री वीरजी, रणवीर चौधरी, दिनेश दिलवानी, गोपालकृष्ण आर्य, रमेश चिलवारा आदि उपस्थित रहे। *(वीरजी)*

## लखनऊ-समाचार

# भीषण जाम ने दुर्घटना को दिया अंजाम

### घायल माँ को बेटी ने सँभाला

रक्षाबंधन पर्व के दौरान लखनऊ के चप्पे चप्पे पर लगे हुए जाम ने कई लोम हर्षक दुर्घटनाओं को अंजाम दे डाला। अमौसी हवाई अड्डे अपनी पुत्री स्वाति को फ्लाइट के निर्धारित समय पर पहुँचाने जा रही माँ श्रीमती मनीषा त्रिवेदी स्वयं घायल हो गईं; साथ ही बेटी स्वाति को भी घातक चोटें आईं। इस दौरान स्वाति के धैर्य, संयम ओर बहादुरी की सभी ने सराहना की है।

घटनाक्रम का विवरण देते हुए मनीषा के पति श्री शशिकिशोर त्रिवेदी ने 'आर्य लोक वार्ता' को बताया कि वे अपने पैतृक नगर रायबरेली से लखनऊ आकर मुंबई जाने वाली फ्लाइट में बैठ गये तथा पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार अपनी बेटी स्वाति का विमान में इंतजार करने लगे; जो रक्षाबंधन के सिलसिले में अपने ननिहाल जनरैलगंज आई हुई थी। श्री किशोर को स्वाति को पूना के एक कॉलेज में पहुँचाना था, जहाँ वह ग्रेजुएशन कर रही है। निर्धारित समय पर फ्लाइट जाने ही वाली थी कि सहसा उन्हें मोबाइल पर सूचना मिली कि स्वाति औंर उसकी माँ दोनों नादरगंज के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गई हैं। फ्लाइट छोड़कर तत्काल श्री किशोर दुर्घटना स्थल पर पहुँचे किन्तु वहाँ से दोनों को तात्कालिक चिकित्सा हेतु लोकबन्धु अस्पताल ले जाया जा चुका था। लोकबंधु में प्राथमिक चिकित्सा के बाद उन्हें ट्रामा सेन्टर मेडिकल कालेज रेफर कर दिया गया- जहाँ श्री शशांक त्रिपाठी की तत्परता के कारण दोनों को चिकित्सा उपलब्ध करायी गई। मेडिकल कालेज से माँ बेटी को चरक अस्पताल में समुचित उपचार हेतु भर्ती कराया गया। डाक्टरों ने उन्हें खतरे से बाहर बताया है। सम्प्रति माँ बेटी का उपचार अभी भी डाक्टरों की देखरेख में चल रहा है। बताते चलें मनीषा श्री ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी पूर्व प्रधान आर्य समाज लाजपतनगर चौक की ज्येष्ठ पुत्री हैं।

घटनाक्रम की उल्लेखनीय बात यह है कि जब नादरगंज मार्ग में मनीषा जिस ऑटो में बैठी हुई थीं, वह अचानक दुर्घटनाग्रस्त होकर पलट गया तो माँ बेटी दोनों ऑटो के नीचे आ गईं। माँ तो तत्काल रक्त स्राव के कारण बेहोश हो गई और बेटी स्वाति भी बुरी तरह घायल हो चुकी थी किन्तु बेटी ने हौसला बनाये रखा; जब उसने माँ को अचेतावस्था में देखा तो स्वयं को संभाला और माँ को ऑटो से बाहर सुरक्षित निकाला। बेटी स्वाति की इस बहादुरी, धैर्य और हौसले की सभी ने सराहना की।

# 'विनम्र' को कविता लोक रत्न सम्मान

३१.०७.१७। चन्द्र वाटिका शिक्षा निकेतन महोना में प्रबन्धक-संरक्षक डॉ.सी. के.मिश्र एवं संरक्षक-कविता लोक सृजन संस्थान ओम नीरव की गरिमामयी उपस्थिति में काव्यशाला तथा काव्यसमारोह आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ.अजय प्रसून ने की। मुख्य अतिथि प्रेमलता त्रिपाठी तथा विशिष्ट अतिथि गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' को 'कविता लोक रत्न' एवं कुमार तरल को 'गीतिका रत्न' सम्मान से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ छन्दकार केदार नाथ शुक्ल की वाणी वन्दना से हुआ। काव्यगोष्ठी में गौरव पाण्डेय 'रुद्र', नीरज द्विवेदी, मंजुल मंजर लखनवी, उमाकान्त पाण्डेय, सचिन मेहरोत्रा, केदार नाथ शुक्ल, मनोज बाजपेयी, विपिन मलिहाबादी, भारती अग्रवाल, संदीप अनुरागी, डा.अशोक शर्मा, कुमार तरल, सुन्दर लाल 'सुन्दर', कुंवर कुसुमेश, मिजाज लखनवी, राहुल द्विवेदी 'स्मित', कमलेश मौर्य 'मृदु', ओम नीरव, गौरी शंकर 'विनम्र', प्रेमलता त्रिपाठी, कृष्ण गोपाल शुक्ला तथा डा.अजय प्रसून ने काव्य-रस वर्षा की। 'विनम्र' की सद्यः प्रकाशित दो बाल कृतियों 'बाल विज्ञान कविताएँ' तथा 'पर्यावरणीय बाल कविताएँ' पर चर्चा हुई। काव्यशाला में विद्यार्थियों द्वारा कविता से सम्बन्धित पूछे गये प्रश्नों का समाधान विनम्र, कुमार तरल तथा ओम नीरव द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन राहुल द्विवेदी ने किया। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

## दिल्ली-समाचार

# आर्यन अभिनन्दन समारोह

ठाकुर विक्रम सिंह जी आर्य जगत् की वह विभूति हैं जो वैदिक धर्म प्रहरी ऋषि भक्तों का हर समय ध्यान रखते हैं। आर्य जगत् के संन्यासियों, विद्वानों, विदुषी महिलाओं, भजनोपदेशकों आदि को उनकी वैदिक धर्म के प्रचारार्थ दी जा रही सेवाओं के प्रतिफल स्वरूप 'आर्यन अभिनन्दन समारोह' के माध्यम से ठाकुर विक्रम सिंह जी, दिल्ली द्वारा बृहद स्तर पर तन-मन-धन से सम्मान तथा प्रोत्साहन समय समय पर किया जा चुका है। इसी शृंखला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी आर्यों का हृदय की गहराइयों से अभिनन्दन 'आर्यन अभिनन्दन समारोह' के अन्तर्गत १७ सितम्बर २०१७ को ए-४१, लाजपत नगर द्वितीय, निकट मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली में किया जाएगा।

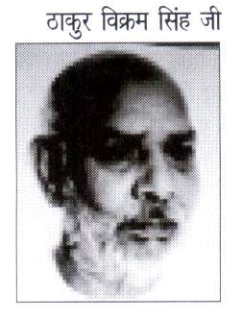

## नवम्बर में आयोजित होगा 20वाँ आर्य लोक वार्ता शैक्षिक सम्मान समारोह

उपमुख्यमंत्री डॉ.दिनेश शर्मा-मुख्य अतिथि एवं कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अध्यक्षता हेतु आमंत्रित

'आर्य लोक वार्ता' का २०वाँ वार्षिक सम्मान समारोह 'शैक्षिक सम्मान समारोह' के रूप में नवम्बर में आयोजित होगा। प्रमुख रूप से शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले त्यागी, चरित्रवान्, कर्मठ व्यक्तित्व समारोह में सम्मान के पात्र होंगे। विस्तृत विवरण आगामी अंकों में प्रकाशित किया जायगा।

लखनऊ-समाचार

### आर्य समाज आदर्शनगर का वेदप्रचार सप्ताह

## आर्य समाज का कोई विकल्प नहीं है

-कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पूर्व कार्यकारी प्रधान कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य ने आर्य समाज आदर्शनगर के वेद प्रचार समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा- 'यद्यपि आज अनेक संस्थाएँ विविध रूपों में आर्य समाज के कार्यक्रमों को अपनाकर उसी तर्ज पर कार्य करती रहती हैं- किन्तु यह बात अच्छी तरह से आर्यजनों को गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि आर्य समाज का अन्यत्र कोई विकल्प नहीं है। अंधविश्वास, धर्म के नाम पर प्रचलित पाखण्ड का निराकरण एवं सत्योपदेश आर्य समाज की वेदी से ही सम्भव है, अन्यत्र नहीं।'

समारोह को आर्य जगत के जाने माने शीर्षस्थ विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री मुम्बई तथा भीष्मजी आर्य भजनोपदेशक, बिजनौर ने क्रमशः अपने प्रवचन एवं भजनों द्वारा सफलता प्रदान की। समापन के मौके पर १५ अगस्त को आचार्य सोमदेव शास्त्री ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास तथा आर्य समाज के योगदान पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज आदर्शनगर लखनऊ द्वारा श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव दि. १२.०८.१७ से १५.०८.१७ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन प्रातकालीन एवं सायंकालीन उभय सत्रों में यज्ञ, भजनोपदेश एवं प्रवचन होते रहे; जिसमें निरन्तर ४ दिनों तक जनमानस आध्यात्मिक रस में अवगाहन करता रहा। दि. ८ से ११ अगस्त तक प्रभातफेरी निकालकर वैदिक संदेश दिया गया। १५ अगस्त को राष्ट्रीय ध्वजारोहण, राष्ट्रगान एवं मध्यान्ह ऋषिलंगर की सराहनीय व्यवस्था की गई। पूर्व प्रधान श्री आत्मप्रकाश बत्रा ने जहाँ आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वहाँ मंत्री श्री सतीश निझावन ने गुड़गाँव से लखनऊ आकर संचालन एवं संयोजन की बागडोर संभाली। भजन पंक्ति के गायन के साथ अपने सधे हुए शब्दों और मधुर शैली से कार्यक्रम संचालन द्वारा उन्होंने आयोजन को प्राणवान बना दिया।

आर्य समाज के मंत्री श्री सतीश निझावन ने मान्य अतिथि कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य को आर्य समाज आदर्शनगर की 'स्वर्णजयन्ती स्मारिका' एवं 'ऊर्मिला स्मृति ग्रंथ' पुस्तकों का सेट भेंट किया। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने 'आर्य लोक वार्ता' के जुलाई २०१७ अंक में छपे श्री अश्विनी देव कपूर के पत्र को पढ़कर सुनाया, जिसमें कहा गया है कि आदर्शनगर आर्य समाज वस्तुतः एक ऐसी समाज है, जहाँ उसके नाम के प्रथम लगा हुआ 'आदर्श' शब्द सार्थकता को प्राप्त होता है। आपने स्वसम्पादित 'कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ' की प्रति आर्य समाज के मंत्री श्री सतीश निझावन को भेंट की।

## आर्य समाज चन्द्रनगर

आर्य समाज चन्द्रनगर, आलमबाग, लखनऊ के तत्वावधान में वेदप्रचार समारोह, श्रावणी उपाकर्म एवं रक्षाबंधन पर्व ०३.०८.१७ से ०६.०८.१७ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। यज्ञ के आचार्य थे सन्तोष कुमार वेदालंकार। मुख्य उपदेशक वक्ता थे आचार्य सनत् कुमार, पानीपत (हरियाणा) एवं भजनोपदेश आचार्य अजय प्रभाकर, मेरठ द्वारा होते रहे। समापन दिवस ०६.०८.१७ को विद्वानों का सम्मान एवं ऋषिलंगर की भी सुरुचिपूर्ण व्यवस्था की गई। संरक्षक श्री रणसिंह के निर्देशन में सम्पन्न वार्षिक उत्सव की अध्यक्षता श्री अरुण विरमानी प्रधान ने की तथा संचालन एवं संयोजन श्री विद्यासागर बग्गा ने कुशलतापूर्वक किया। समारोह में प्रतिदिन बड़ी संख्या में आर्य नर नारियों ने पहुँचकर विद्वानों के प्रवचन, यज्ञ एवं सत्संग में भाग लिया। *(सुशील कुमार पाण्डेय)*

## आर्य समाज इन्दिरानगर

आर्य समाज इन्दिरानगर, १, वैशाली इन्क्लेव, लखनऊ द्वारा श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्यन्त ०७.०८.१७ से १५.०८.१७ तक वेद प्रचार सप्ताह पारिवारिक यज्ञों का आयोजन करके मनाया गया। इस अवसर पर ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड से प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं.जयप्रकाश आर्य को आमंत्रित किया गया। जिन परिवारों को वेद प्रचार हेतु चयनित किया गया उनके नाम इस प्रकार हैं- सर्वश्री सदानन्द राय, ११७, लोहिया विहार, इन्दिरानगर; रत्नेन्द्र कुमार जौहरी, ए-१००, इन्दिरानगर; अभय मुनि, ११/१०८०, इन्दिरानगर; जे.पी.आर्य, सी-४३६, इन्दिरानगर, आर्येन्द्र कुमार जौहरी, ६३१/१, सेक्टर-८, इन्दिरानगर; डॉ.इन्द्रदेव गुप्त, १/२५३, वरदान खण्ड, गोमतीनगर विस्तार; डॉ.रमाकान्त, सी-१२११, इन्दिरानगर; भारतेन्दु देव वर्मा, सी-२२६, हरिहर नगर; ओम कुमार सक्सेना, ३०६, पटेलनगर; श्रीमती कुसुम सिंह, ६०, वैशाली इन्क्लेव, इन्दिरानगर।

उपयुक्त परिवारों में आर्य समाज इन्दिरानगर के जिन विद्वान् सदस्यों ने यज्ञ के ब्रह्मा एवं उपदेशकों की भूमिका का निर्वाह किया- उनके नाम हैं- रामगोविन्द ठाकुर, डोरीलाल आर्य, रामेन्द्रदेव वर्मा, नवनीत निगम, श्रीमती कान्ति कुमार, डॉ. वेद प्रकाश(इं.), अभय मुनि, प्रो.इन्द्रदेव गुप्त। समस्त कार्यक्रम श्रीमती कान्ति कुमार प्रधान, रामेन्द्रदेव वर्मा मंत्री एवं डोरीलाल आर्य कोषाध्यक्ष के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

## योग साधना द्वारा नीरोग रहने का संदेश

योगऋषि स्वामी रामदेव द्वारा संचालित पतंजलि योगपीठ (पूर्वी क्षेत्र) लखनऊ के तत्वावधान में दि. २३ जुलाई से ६ अगस्त २०१७ तक योग प्रशिक्षण शिविर-सी.एम.एस. गोमतीनगर, लखनऊ में योगाचार्य श्री पीयूषकान्त जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। १०० चुनिंदा प्रशिक्षार्थियों को पतंजलि योगपीठ के योग शिक्षकों की टीम के माध्यम से करो योग, रहो नीरोग का संदेश दिया गया। ६ अगस्त को दीक्षान्त के अवसर पर वैदिक यज्ञ भी पीयूषकान्त जी ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर 'आर्य लोक वार्ता प्रकाशन' की वैदिक यज्ञों की प्रामाणिक पुस्तक 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' का योगपीठ द्वारा वितरण किया गया। प्रशिक्षकों में श्रीमती मीना दीक्षित, श्री गोपालकृष्ण श्रीवास्तव, श्री बाबूराम, श्री जवाहरलाल शाह, श्री राम सनेही, श्री सुरेन्द्र जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

### आर्य लोक वार्ता के तत्वावधान में

## सामाजिक उत्थान को समर्पित श्रीमती मधुर भण्डारी का

### सार्वजनिक अभिनन्दन - मानपत्र समर्पित

लोकप्रिय हिन्दी मासिक 'आर्य लोक वार्ता' के तत्वावधान में दि.०५.०८.२०१७ को आर्य समाज मंदिर, महावीरगंज, लखनऊ के प्रांगण में नई दिल्ली की दिव्यांगों के उत्थान हेतु रचनात्मक कार्य करने वाली प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती मधुर भण्डारी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री प्रेममुनि वानप्रस्थी, आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तराखण्ड) ने की तथा संचालन डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक ने किया।

पर्यावरणविद् श्री पाल प्रवीण ने श्रीमती भण्डारी के लोकोपकार को समर्पित जीवन एवं कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि प्रारंभ से ही जोखिम उठाते हुए दीनों, बलहीनों, दिव्यांगों की सेवा-सहायता में तत्पर मधुर भण्डारी का जीवन त्याग बलिदान के कारनामों से ओतप्रोत है। श्री पाल प्रवीण ने श्रीमती मधुर भण्डारी द्वारा दिव्यांगों और बलहीनों के लिए एक ऐसी बस का निर्माण करने का वृत्तांत बताया जिसकी सारी दुनिया में सराहना हुई तथा शासन द्वारा उन्हें सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। श्री पाल प्रवीण ने कहा- यह हमारा सौभाग्य है कि आज दूसरी बार श्रीमती भण्डारी ने यहाँ आकर जीवन में कर्मठता एवं कर्तव्य परायणता की शिक्षा हमें प्रदान की है। बताते चलें श्रीमती मधुर भण्डारी पर्यावरणवेत्ता श्री पाल प्रवीण की अनुजा हैं। कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक यज्ञ से हुई। सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष आचार्य विश्वव्रत ने वैदिक राष्ट्रगान 'ओं आब्रह्मन्' का हिन्दी काव्यानुवाद सहित गायन किया। श्रीमती कमलेश पाल ने श्रीमती भण्डारी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। न्यायमूर्ति श्री करनलाल शर्मा ने श्रीमती भण्डरी की उपलब्धियों की सराहना की। श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने काव्य-पंक्तियों द्वारा अभिनन्दन किया तथा भारत विकास परिषद के श्री शिवेन्दु श्रीवास्तव ने स्मृति चिन्ह भेंट कर अतिथि का स्वागत किया।

श्रीमती सत्यप्रभा शास्त्री ने स्वागतगान का अपनी सुरीली स्वर लहरी में गायन कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। 'आर्य लोक वार्ता' की ओर से काव्यात्मक मानपत्र प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य, अध्यक्ष प्रेममुनि जी, पाल प्रवीण, श्री अभिषेक, श्रीमती कमलेश पाल, श्री नवीन कुमार सहगल, श्री सर्वमित्र, डॉ.राम नारायण वर्मा इत्यादि ने श्रीमती भण्डारी को भेंट किया। श्रीमती मधुर भण्डारी ने अपने भाषण में आयोजकों को इस आयोजन हेतु धन्यवाद ज्ञापन एवं आभार प्रदर्शन किया। श्रीमती भण्डारी को समर्पित मानपत्र की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं-

पी लिया जहर पर आह न की,
कण्टक पथ की परवाह न की,
खुद बढ़ीं, बढ़ाया औरों को-
सुख-सुविधाओं की चाह न की।
गर्वोन्नत मस्तक नारी का,
स्वागतम् मधुर भण्डारी का।।

## मेरठ गौरव श्री प्रियपाल की 105वीं जयन्ती

श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर अलीगंज वैदिक सत्संग एवं सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में यज्ञ-भजन-गोष्ठी का कार्यक्रम ११.०८.१७ को 'योगाश्रम', एम.एस.-१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज में आयोजित हुआ। यज्ञ के आचार्य थे विश्वव्रत शास्त्री एवं नवीन सहगल। श्री पाल प्रवीण के पिता श्री प्रिय पाल की १०५वीं जयन्ती भी इसी दिन पड़ती है। श्री पाल प्रवीण ने अपने पिता के गुणों, उनके उत्कृष्ट कार्यों, समाज-सेवा, प्रशासनिक पदों पर कार्यरत होने तथा १९४९ में लखनऊ से अपने पैत्रिक निवास मवाना मेरठ में आकर अपने पूज्य पिताजी लाला हरप्रसाद जी की सेवाव्रत व कृषि फार्म स्थापित करने के विषय में सभी को बताया। डा. सत्यकाम आर्य ने श्री प्रियपाल की स्मृति में एक गीत प्रस्तुत किया। श्री प्रेममुनि ने पतंजलि के अष्टांग योग के विषय में चर्चा की। अन्त में आचार्य विश्वव्रत शास्त्री ने गायत्री मंत्र की भावपूर्ण व्याख्या की। *(पाल प्रवीण)*

## सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट

सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट एवं सहयोगी संस्था जिला वेद प्रचार संगठन, लखनऊ के तत्वावधान में न्यास के संस्थापक आचार्य विश्वव्रत शास्त्री के आध्यात्मिक दिशानिर्देश में दि. ०६.०८.१७ से १५.०८.१७ तक श्रावणी उपाकर्म, वैदिक धर्म प्रचार एवं स्वतंत्रता दिवस समारोह तथा त्रैमासिक पत्रिका के विमोचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ये कार्यक्रम जिन स्थलों पर आयोजित हुए उनकी तथा आयोजन के अध्यक्षों सहित नामावली इस प्रकार है-

सीताविहार कालोनी-श्री वशिष्ठ नारायण; मदर्स प्राइज स्कूल जानकीपुरम-श्रीमती हीरामणि त्रिपाठी; आर्य समाज महावीरगंज-श्री सर्वमित्र; दिव्यता पैलेस जानकीपुरम-श्रीमती जयन्ती सिंह; योगाश्रम, अलीगंज-श्री पाल प्रवीण; एम.एम. वी. १/१०, सेक्टर-बी, अलीगंज- श्री देवेन्द्र स्वरूप गुप्त; वेद मंदिर राजाजीपुरम्-डॉ.आनन्द मनीषी; गायत्री शक्तिपीठ कुर्सी रोड-श्री भानु प्रताप सिंह; आर्ष गुरुकुलम् रसूलपुर कायस्थ-डा.सत्यकाम आर्य। समस्त कार्यक्रमों में भारी संख्या में श्रद्धा समन्वित नर-नारियों ने यज्ञ में आहुतियाँ अर्पित कीं तथा विद्वानों के उपदेश एवं भजनों का आनन्दलाभ प्राप्त किया। *(आ.लो.वा.ब्यूरो)*


संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी, पिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com


## सहयोग राशि

| | | |
|---|---|---|
| सामान्य सदस्य | – | 100 रु. वार्षिक |
| होता सदस्य | – | 1,500 रु. वार्षिक |
| संरक्षक | – | 15,000 रु. |
| प्रतिष्ठापक | – | 50,000 रु. |

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651


प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
विश्वमित्र, एडवोकेट, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ


मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।